जैन पत्रकारिता
के विविध आयाम

संपादक
डॉ. अखिल बंसल

जैन पत्रकारिता
के विविध आयाम

सम्पादक

डॉ. अखिल बंसल

एम.ए., डिप्लोमा पत्रकारिता, पी-एच.डी.

प्रकाशक

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ

129, जादोन नगर-बी, स्टेशन रोड़, दुर्गापुरा, जयपुर-302018

E-mail : jainsampadaksangh@gmail.com Mob. : 9929655786

जैन पत्रकारिता के विविध आयाम	**:**	**सम्पादक : डॉ. अखिल बंसल**
प्रथम संस्करण	**:**	500
(31 मई, 2025) श्रुतपंचमी		
मूल्य : **50 रुपये**		मुद्रक : **देशना एन्टरप्राइजेज, जयपुर**

प्रकाशकीय

प्रतिदिन बदलती दुनियां में जब हर चीज़ बदल रही है पत्रकारिता भी बदलाव से कैसे बच सकती थी। पत्रकारिता जहाँ पहले मिशन थी अब व्यवसाय बन चुकी है। पत्रकारिता जहाँ पहले जन भावना की आवाज हुआ करती थी अब व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति का माध्यम बनती जा रही है।

देश के स्वाधीनता संग्राम के दौरान जन जागरण में जैन पत्र पत्रिकाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है और वे क्रांति की अलख जगाने में किसी से पीछे नहीं रही हैं। स्वाभाविक तौर पर आजादी के पश्चात पत्रकारिता के क्षेत्र में जो परिवर्तन की लहर आई है उससे जैन पत्रकारिता भी अछूती नहीं रही है। इस सबके बावजूद आज भी अनेक जैन पत्र और पत्रकार साहस पूर्वक समाज को आईना दिखाने का काम कर रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में जैन पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर जैन पत्रकारिता के दिग्गजों के आलेख न केवल पठनीय हैं वरन् उनमें प्रदत्त मार्गदर्शन अनुकरणीय भी हैं। दिग्गज जैन पत्रकार डॉ. अखिल बंसल के सम्पादन में प्रकाशित यह पुस्तक स्वागत योग्य है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसमें प्रकाशित आलेख जैन पत्रकारों के लिए एक मार्गदर्शक का काम करेंगे। इतने उपयोगी प्रकाशन के लिए बहुत बहुत बधाई। जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने वालों को यह कृति उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

– मिलापचंद डण्डिया

न्यास अध्यक्ष–अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ

लेखक कौन/कहाँ

1. डॉ. अखिल बंसल, जयपुर	5	7. हुकमचन्द जैन 'मेघ', दिल्ली	47
2. डॉ. नन्दलाल जैन, रीवा	13	8. सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर	54
3. डॉ. अंकुर जैन, भोपाल	27	9. डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर	58
4. डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता	34	10. डॉ. नरेन्द्र भानावत, जयपुर	64
5. नीरज जैन, सतना	41	11. डॉ. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार'	72
6. कपूरचन्द पाटनी, गोहाटी	45	12. मिलापचंद डंडिया, जयपुर	87

अपनी बात

'जैन पत्रकारिता के विविध आयाम' पुस्तक का संपादन कर उसे प्रकाशित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। **'जैन पत्रकारिता'** पर संभवतः यह प्रथम कृति होगी ? इस पुस्तक में मेरे आलेख के अतिरिक्त डॉ. अंकुर जैन, डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा, श्री नीरज जैन, श्री कपूरचंद पाटनी, श्री हुकमचंद मेघ, श्री सुरेश सरल, डॉ. सुरेन्द्र भारती, डॉ. नरेन्द्र भानावत, डॉ. ऋषभचंद फौजदार डॉ. नंदलाल जैन तथा श्री मिलापचंद डण्डिया सरीखे सशक्त कलमकारों के लेख समाहित हैं जो निश्चय ही युवा जैन पत्रकारों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। इनमें से अधिकांश लेख समन्वय वाणी के अप्रैल 2006 प्रथम पक्ष जैन पत्रकारिता विशेषांक से लिये गये हैं जो कि उसी काल खण्ड में लिखे गये हैं अत: पाठक उन्हें तद्नुरूप ही स्वीकारें।

भारतवर्ष की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक परंपराओं में जैन धर्म का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जैन धर्म जहाँ एक ओर सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य जैसे मूल्यों को केन्द्र में रखता है, वहीं दूसरी ओर समाज में नैतिकता, संयम और समरसता की भावना का विस्तार करता है। इस संदर्भ में जैन पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम रही है, जिसने न केवल धार्मिक चेतना को जागृत किया, अपितु सामाजिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों की पुनःस्थापना तथा समरसतामूलक संवाद की प्रभावी भूमिका भी निभाई।

जैन पत्रकारिता का प्रारंभ धार्मिक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हुआ। जैनाचार्यों, संतों और विद्वानों के प्रवचनों, ग्रंथों और उपदेशों को समाज तक पहुँचाने हेतु विविध पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की गईं। जैसे - जैन प्रकाश, आत्मधर्म, तीर्थंकर, सन्मति संदेश, जिनवाणी, दिशा बोध, अहिंसा संदेश, अनेकांत, जैनगजट, जैन मित्र, जैन संदेश, पार्श्व ज्योति, सन्मति वाणी,समन्वय वाणी आदि। इन माध्यमों ने धर्म को जन-जन तक पहुँचाया तथा आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा दी।

जैन पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं रहा, अपितु 'सदाचार' और 'संयम' के मूल्यों की स्थापना करना भी रहा है। इसमें जीवन निर्माण की दृष्टि से नैतिक लेख, आत्मकल्याण की दिशा देने वाली सामग्री, व्रत, त्याग, तप और चारित्र की प्रेरणाएं प्रमुख रूप से समाहित रहती हैं।

जैन पत्रकारिता केवल धार्मिक-सांस्कृतिक दायरे में सीमित नहीं रही, बल्कि उसने सामाजिक समस्याओं, पर्यावरणीय मुद्दों, शाकाहार आंदोलन, अहिंसा यात्रा, गौ-संरक्षण आदि विषयों पर भी प्रभावी भूमिका निभाई है। आचार्य महाप्रज्ञ जी, आचार्य विद्यानंद जी तथा आचार्य विद्यासागर, मुनि तरुण सागर जी जैसे संतों के विचारों ने जनमानस में समाज सुधार का भाव जगाया, जिसे पत्रकारिता के मंच ने विस्तार दिया।

जैन साहित्य की विशाल परंपरा को जनमानस तक पहुँचाने में जैन पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जीवन-दर्शन, तत्त्वचिंतन, दिग्दर्शन, स्वाध्याय, ग्रंथ परिचय आदि विधाओं के माध्यम से गंभीर से गंभीर चिंतन-सामग्री को सरल भाषा में प्रस्तुत कर पाठकों को आत्मिक समृद्धि की ओर उन्मुख किया गया।

वर्तमान डिजिटल युग में जैन पत्रकारिता ने नई उड़ान भरी है। वेबसाइट, ब्लॉग, यूट्यूब चैनल, ई-पेपर, सोशल मीडिया जैसे माध्यमों के जरिए अब जैन विचारधारा वैश्विक स्तर पर प्रसारित हो रही है। जैन टुडे, अहिंसा टाइम्स, सम्यक दर्शन, जैन वर्ल्ड जैसे अनेक डिजिटल मंच आज जैन दर्शन के संवाहक बन रहे हैं।

जैन पत्रकारिता को आज दोहरी चुनौती का सामना है - एक ओर समसामयिक पत्रकारिता के बाजारवाद से संघर्ष करना और दूसरी ओर अपनी मूल भावभूमि (सदाचार, संयम, निष्पक्षता) को बनाए रखना। इस दिशा में युवा पत्रकारों को आगे आना होगा जो तकनीकी दक्षता के साथ मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता के वाहक बन सकें।

जैन पत्रकारिता केवल सूचनाओं का प्रवाह नहीं है, वह आत्मा की आवाज है, जो संयम, विवेक और समरसता का संवाद करती है। इसकी विविधता ही इसकी शक्ति है - जहाँ धर्म भी है, दर्शन भी, समाज भी है और साहित्य भी। इसे और अधिक प्रभावी, प्रासंगिक एवं युवा-केन्द्रित बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास अपेक्षित हैं। इस दिशा में आपको यह कृति उपयोगी सिद्ध होगी, यही कामना है।

- डॉ. अखिल बंसल

जैन पत्रकारिता आज के संदर्भ में

■ डॉ. अखिल बंसल, जयपुर

पत्रकारिता को ऐसे कार्य की संज्ञा दी गई है जिसका संबंध समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों से होता है। लोकतंत्र में पत्रकार की भूमिका लोकनायक की होती है। राष्ट्रीय, धार्मिक एवं सामाजिक चेतना के विकास में जैन पत्रकारिता का उल्लेखनीय योगदान रहा है। सामाजिक जड़ता और कुरीतियों के उन्मूलन में इस विधा ने अपने धर्म का निर्वहन बखूबी किया है। जन अभिव्यक्ति के इस सशक्त माध्यम को लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में चौथी सत्ता निरूपित की गई है। पत्रकारिता के महत्व को **अकबर इलाहाबादी** ने निम्न प्रकार व्यक्त करते हुए लिखा है–

खींचो न कमान, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखवार निकालो।।

जहाँ एक ओर **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी** ने समाचार पत्रों को जनता का विश्वविद्यालय कहा है वहीं दूसरी ओर इसे सदा चलने वाली संसद माना गया है। तीर्थंकर के आद्य संपादक **डॉक्टर नेमीचंद जैन पत्रकार के विषय में अपना मंतव्य प्रकट करते हुए लिखते हैं– पत्रकार का बुनियादी काम समाज का पथ प्रदर्शन है। वह मूलतः उस माली की भांति है जो पौधों की साज संभाल; देखभाल करता है और उन्हें विकास का हरसंभव अवसर उपलब्ध कराता है। पौधों को होने वाले हर नुकसान पर उसकी नजर होती है और वह उनकी हर धड़कन अपनी धड़कन समझता है।**

जैन समाज की समस्त गतिविधियों का लेखा– जोखा व्यवस्थित ढंग से समाज तक पहुंचाना जैनत्व की संस्कृति का

संरक्षण व उसके संवर्धन में योगदान देना जैन पत्रकारिता के दायरे में आता है। जिस प्रकार वक्ता अपने भाषण से, पंडित अपने प्रवचन से, लेखक अपने लेखन से, कवि अपनी कविता से जनमानस को प्रभावित करने में सक्षम होते हैं उसी प्रकार पत्रकार या संपादक अपनी पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से वैचारिक क्रांति करने में सक्षम होता है। पत्रकार सामाजिक जीवन में प्राण वायु का संचार कर उसमें जीवंतता प्रदान करता है।

किसी भी पत्र पत्रिका के प्रकाशन के पूर्व उसका प्रकाशक पत्र की प्रभावी रीति नीति तैयार करता है और उसे कुशल संपादक के हाथ में संचालन हेतु सोंप देता है। पत्र पत्रिका का भविष्य उसी रीति नीति पर टिका होता है । पत्र की रीति नीति किस प्रकार की हो इस संबंध में जैन संदेश के पूर्व संपादक पंडित कैलाश चंद जी सिद्धांत शास्त्री लिखते हैं- **मेरी दृष्टि से जैन पत्र-पत्रिकाओं की रीति नीति में जैन दृष्टिकोण का भी संरक्षण होना चाहिए। यदि हम जैनत्व की कोई गहन मानवी भूमिका मानते हैं और जैन सिद्धांतों की रक्षा करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें उनकी रक्षा अपनी लेखन शैली से ही करनी चाहिए अर्थात् लिखने में सच्चाई हो, ईमानदारी हो महज कटुक्तियों और कोरी आपेक्षात्मक भाषा न हो ।**

आज जैन पत्रकारिता का लगभग 130 वर्ष का दीर्घकालीन इतिहास है। अपने अल्प साधनों और सीमित क्षेत्र में रहकर मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान में जैन समाज की लगभग 450 पत्र-पत्रिकाएं अस्तित्व में हैं। जैन गजट,जैनमित्र, जैन बोधक,जैन प्रकाश, जैसे शताधिक वर्ष प्राचीन समाचार पत्र हैं जिनका गौरवशाली इतिहास रहा है। वीर, जैन संदेश,

जैन जगत, जैन प्रचारक, जिनवाणी, जैन ध्वज, जैन भारती, तारण बंधु, शास्वत धर्म, अणुव्रत, सुधर्मा, ओसवाल समाज, श्रमणोपासक, अमर भारती, तथा अनेकांत भी दीर्घजीवी पत्र-पत्रिकाएँ हैं जिनका प्रकाशन निरंतर जारी है। वर्तमान में दिशाबोध, श्रमण, प्राकृत विद्या, पार्श्वज्योति, अर्हत वचन, समन्वय वाणी, वीतराग वाणी, महावीर मिशन, सम्यग्ज्ञान, जैन जनवाणी, शोधादर्श, सन्मति, तिथ्यर, तथा सन्मति वाणी जैसी पत्र-पत्रिकाएं समाज को मानसिक खुराक देने में पूर्णतः समर्थ हैं। तीर्थंकर,वीर वाणी, जिन भाषित, सन्मति संदेश, कथालोक, तीर्थंकर वाणी, जैन दर्शन, अहिंसा वाणी तथा धर्म मंगल जैसी लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं का असमय बंद हो जाना जैन पत्रकारिता के लिए खतरे की घंटी है।

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में जनसंचार केन्द्र के भू.पू.अध्यक्ष डा.संजीव भानावत ने अपने शोधग्रंथ सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता में पत्रकारिता के इतिहास को तीन भागों में विभाजित किया है। उन्होंने जैन पत्रकारिता का प्रथम युग सन् 1880 से 1900 द्वितीय युग 1901 से 1947 तथा तृतीय युग 1948 से अब तक का माना है। आपके अनुसार गुजराती में प्रकाशित जैन दिवाकर सबसे प्राचीन जैन पत्र है जिसका प्रकाशन सन् 1875 में अहमदाबाद से छगनलाल उम्मेद चंद द्वारा किया गया था। सन् 1880 में प्रयाग से प्रकाशित 'जैन पत्रिका' को हिन्दी भाषा की प्रथम जैन पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है। स्वतंत्रता के पूर्व के ख्यातनाम पत्रकारों में पं. पन्नालाल बाकलीवाल, पं. नाथूराम प्रेमी, पं. जुगलकिशोर जी मुख्तार, बाबू कामता प्रसाद जैन, पं. दरबारी लाल सत्यभक्त,डा.ज्योति प्रसाद जैन, पं. कैलाशचंद शास्त्री, ब्र. शीतल प्रसाद जैन, बाबू सूरज भान जैन, पं. मक्खनलाल जैन,

पं. अजित कुमार शास्त्री, पं. गोपालदास बरैया, डॉ. हीरालालजैन, डॉ. ए.एन. उपाध्ये, पं. के. भुजवली शास्त्री, पं. चैनसुखदास न्यायतीर्थ तथा पं. परमेष्ठीदास जी प्रमुख हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के प्रमुख जैन पत्रकारों में डॉ. नेमीचंद जैन, डॉ. लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. कन्छेदीलाल जैन, डॉ. नरेन्द्र भानावत, चंदनमल चांद, ऋषभदास रांका, जमनालाल जैन, पं. भंवरलाल न्यायतीर्थ, रामजी भाई दोषी, पं. कस्तूरचंद कासलीवाल, पं. इन्द्रचंद शास्त्री, दलसुख मालवणियां, पं. नाथूलाल शास्त्री, श्री नीरज जैन, डॉ. सागरमल जैन, श्री अजित प्रसाद जैन, डॉ. भागचंद भास्कर, डॉ. रतनलाल जैन, डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, पं. रतनचंद भारिल्ल, ललित गर्ग, डॉ. अनुपम जैन, श्रीमती लीलावती जैन, डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, डॉ. अखिल बंसल, डॉ. सुरेन्द्र भारती, डॉ. नीलम जैन, डॉ. ज्योति जैन आदि का नाम उल्लेखनीय है।

वर्तमान जैन पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का जो स्वरूप है उसे हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं-

(अ) संस्थागत (ब) व्यक्तिगत।

(अ) जैन समाज में वर्तमान में तीन प्रकार की संस्थाएं कार्यरत हैं। एक तो जातिगत संस्थाएँ हैं, दूसरी सामाजिक संस्थाएँ हैं और तीसरी साधु संघों से जुड़ी संस्थाएँ कार्यरत हैं।

(1) जातिगत संगठन – जैन समाज अनेक जातियों और उप जातियों में विभक्त है। इनमें प्रमुख जातियाँ हैं-खण्डेलवाल, अग्रवाल, परवार, कच्छी, ओसवाल, जैसवाल, हूमड़, बघेरवाल, गोलापूरब, लमेंचू, पद्मावती पोरवाल आदि। लगभग सभी जातियों की अपनी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती रही हैं।

ऐसी पत्र-पत्रिकाओं में अग्रगामी, अग्रपथ, अग्रवाल बंधु, ओसवाल जैन, ओसवाल बंधु, कच्छ मित्र, कच्छी दशा, खण्डेलवाल, जैन हितैषी, परवार बंधु, परवार, गोलापूरब जैन, पद्मावती संदेश, पल्लीवाल जैन पत्रिका, जैसवाल जैन, स्वतंत्र जैन जैसी पत्रिकाएँ अस्तित्व में आईं।

(2) सामाजिक संगठन – जैन समाज के अनेक सामाजिक संगठन कार्यरत हैं और लगभग सभी संगठनों ने अपनी-अपनी रीती-नीति के अनुसार पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित की। जैसे भारत जैन महामण्डल की **जैन जगत**, दिगम्बर जैन महासमिति की **महा समिति पत्रिका**, दिगम्बर जैन परिषद का **वीर**, दिगम्बर जैन महासभा का **जैन गजट**, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी की **जैन तीर्थ वंदना**, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की **जिनवाणी**, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ का **जैन संदेश**, मुम्बई दिगम्बर जैन प्रांतीय सभा का **जैन मित्र**, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

अनेक सामाजिक संस्थाएं न्यास के रूप में भी कार्यरत हैं। इस प्रकार के अनेक न्यासों ने भी अपनी-अपनी पत्रिकाएं प्रकाशित कर जैन पत्रकारिता के महत्व को दर्शाया है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर से **वीतराग-विज्ञान** एवं **जैन पथप्रदर्शक**, कुंदकुंद ज्ञानपीठ इन्दौर से **अर्हत् वचन**, कुंदकुंद भारती दिल्ली से **प्राकृत विद्या**, दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़ से **आत्मधर्म**, वीर सेवा मंदिर ट्रस्ट दिल्ली से **अनेकांत**, महावीर ट्रस्ट इन्दौर से **सन्मति वाणी**, अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ जयपुर से **जैन संवाद**, ध्रुवधाम, संस्कार सागर, श्रमणोपासक, गुरु प्रसाद, मंगलायतन, श्रमण, तुलसी प्रज्ञा, आदि को इसी प्रकार की श्रेणी में रखा जा सकता है।

(3) साधु संघों से प्रभावित संगठन – जैन समाज में आज जितने भी साधु संघ हैं लगभग सभी ने जैन पत्रकारिता के महत्व को समझा है। यही कारण है कि साधु संघ भी मीडिया के प्रभाव से अछूते नहीं हैं तथा अपने मार्गदर्शन में पुष्प वार्ता, अहिंसा महाकुंभ, सम्यग्ज्ञान, पुलक वाणी, सराक सोपान, संस्कार सागर, गुप्ति संदेश, वर्णी प्रवचन, झरता करुणा स्रोत जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन करते रहे हैं।

(ब) व्यक्तिगत – इस श्रेणी की पत्रिकाओं में दिशा बोध, समन्वय वाणी, करुणा दीप, तीर्थंकर, सन्मति संदेश, वीर निकलंक, पार्श्वज्योति, अजमेर टुडे, मानतुंग पुष्प, देवपुरी वंदना, धर्म मंगल, स्थूलभद्र संदेश, जय कल्याण श्री, जिनेन्दु, जैन जनवाणी आदि प्रमुख हैं।

इतना सब होते हुए भी जैन पत्रकारिता उस शिखर को नहीं छू पा रही है जहां तक उसे पहुंच जाना चाहिए था। सच कहूं तो आज जैन पत्रकारिता अपने मापदण्डों पर खरी नहीं उतर पा रही।

अब कुछ पत्र पत्रिकाओं ने ई पत्रिका प्रारंभ की है तथा सोशल मीडिया के क्षेत्र में कदम बढ़ाए हैं । जिनवाणी, पारस, अरिहंत तथा आदिनाथ जैसे जैन चैनलों ने जिस प्रकार लोकप्रियता हासिल की है काबिले तारीफ है; पर यह सभी चैनल जैन समाज को वह खुराक नहीं दे पा रहे जिसकी आज आवश्यकता है। इन सभी चैनलों पर साधुओं का कब्जा जैसा ही है । सभी चैनल प्रायोजित हैं अतः साधुओं के आभामंडल से बाहर निकलने में असमर्थ हैं । समाज की बलिहारी है आज कोई भी जेब का पैसा खर्च कर पत्र– पत्रिका मंगा कर नहीं पढ़ना चाहता । वह भी उसे फ्री चाहता है; विज्ञापन का

सहयोग देना तो दूर की बात है। जैन समाज पूर्णता साधुओं के कब्जे में है वह जैसे बिठाए बैठेगा जैसे उठाए उठेगा यह परिदृश्य समाज को पंगु बनाए हुए है। जैन समाचार पत्र पत्रिकाओं को चिंतनशील लेखक वर्ग तैयार करने की ओर ध्यान देना समय की आवश्यकता है। स्तरीय पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन निश्चित ही पाठक वर्क को आकर्षित करेगा।पाठक वर्ग का विस्तार उद्योगपतियों को विज्ञापन देने के लिए लालायत करेगा जिससे जैन समाचार पत्रों को आर्थिक संकट से मुक्ति मिल सकेगी। बाल वर्ग, युवा वर्ग तथा महिला वर्ग की पत्रिकाएं जैन समाज में नैतिक जागरण का कार्य बखूबी कर सकती हैं । जैन पत्रकारों को शिक्षण- प्रशिक्षण के द्वारा कुशल पत्रकारों की श्रेणी में लाया जा सकता है । आज मीडिया प्रचार- प्रसार का सशक्त माध्यम है। समाज यदि प्रत्यत्न कर अपना ऐसा चैनल प्रारंभ करें जिसमें सामाजिक गतिविधियों के साथ संतों और विद्वानों के प्रभावी प्रवचन, जैन कथानकों पर आधारित लोकप्रिय सीरियल आदि का निर्माण तथा जैन आगम संबंधी ज्ञान वार्ताएं प्रारंभ की जाएं तो नई पीढ़ी में संस्कार दृढ़ होंगे जिससे एक स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकेगा।

अंत में सुप्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल जैन का पत्र पत्रिकाओं के भावी भूमिका के विषय में निम्न कथन दृष्टि है; वे लिखते हैं कि- **आज जबकि भौतिक शक्तियों का साम्राज्य चारों ओर फैला हुआ है युग के मुंह को नई दिशा में मोड़ना गौरी शंकर के शिखर पर चढ़ने के समान है। पर जैन पत्र पत्रिकाओं के सामने तो महावीर की दुर्द्धर्ष साधना है, गांधी का प्रखर तप है अतः उन्हें निर्भय होकर दृढ़ता पूर्वक नए मार्ग का चुनाव करना चाहिए और वह यह कि वे जैन धर्म को विश्व धर्म बनाने के योग्य**

बनाएंगे। अहिंसा, सत्य आदि के अस्त्रों को तेजस्विता प्रदान करेंगे और भय, विद्वेष, भौतिकता, सांसारिक महत्वाकांक्षा आदि महान व्याधियों से पीड़ित मानव समाज को आशा का संदेश देंगे।

अब भी समय है जैन पत्रकार अपनी जडता से बाहर निकलें और अपने धर्म का निर्वहन करते हुए संकुचित दायरे का परित्याग कर नए संकल्प व दृढ़ आस्था के साथ नवनिर्माण में जुटें यही समय की मांग है । यदि हम मैले तकिए का गिलाफ उतार कर फेंकने का साहस दिखा सके तो निश्चित ही भावी इतिहास हमारा होगा।

पत्रकार क्या हैं?

1. जब किसी दबंग व्यक्ति द्वारा आपके अधिकार का हनन किया जाता है तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है?

2. जब प्रशासन के किसी कर्मचारी द्वारा आप परेशान किये जाते हैं तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है?

3. जब आप अपनी बात प्रशासन तक पहुंचना चाहते हैं तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है ?

4. जब कोई लेखपाल, कोटेदार, प्रधान या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा आपका हक छीनने की कोशिश की जाती है तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है ?

5. जब आप किसी राजनेता, अधिकारी के साथ किसी विशेष कार्यक्रम को करते हैं तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है ?

6. जब आपको समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर भगाने की चिंता होती है तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है ?

7. जब आप अपने बच्चे को स्कूल भेजते हैं और वहां उसे अध्यापक या किसी अन्य बच्चे द्वारा मानसिक यातनाएं दी जाती हैं तब एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है?

जैन पत्र और पत्रकारिता

■ डॉ. नन्दलाल जैन, रीवा

पत्र पत्रकार और पत्रकारिता ये तीनों शब्द सह संबंधित हैं। पत्र या पत्रिकाएं समाचार, विचार वर्तमान और भावी दृष्टिकोण आदि के संप्रसारण के समन्वित रूप हैं। संस्कृत शब्द कोष के अनुसार पत्र शब्द पत् (पत्तन) त्र (रक्षक) से बना है जिसका अर्थ है कि पत्र सामान्यतः पतनशील को पतन से रक्षा करते हैं। प्रारंभ में पत्र शब्द लेखन के अर्थ में प्रयुक्त होता था। शास्त्रार्थों में पत्र वाक्य की भी परम्परा रही है जहां शास्त्रार्थ लिखित रूप में किया जाता था। पर अब इसका अर्थ व्यापक हो गया है। यह व्यक्तिगत से सामाजिक या विश्वगत हो गया है जिसके माध्यम से उपरोक्त बिन्दुओं का संप्रसारण होता है।

किसी भी पत्र के लिए 'पत्र' की नीति के अनुसार (1) समाचार संकलन, विचार संकलन (लेख आदि) तथा सम्पादन की प्रक्रियायें महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। फलतः पत्रकार को इन प्रक्रियाओं में तो प्रवीण होना ही चाहिए उसे पाठकों को अवनति के मार्ग पर न चलने की दिशा भी देनी चाहिए। साथ ही उसमें मानवीय उदात्त गुण करुणा, सहानुभूति, सहयोग, समन्वय, वस्तु निष्ठता और जहां तक बन सके पक्षातीतता भी होनी चाहिए। समाचार लेखादि के संकलन में उसके ये गुण ही पत्रकारिता की संज्ञा लेते हैं। इस दृष्टि से हम जैन पत्रकारिता पर विचार करें।

किसी भी पत्र/पत्रिका के विषय में यह जानना आवश्यक है कि उसके प्रकाशन का उद्देश्य क्या है और जैनों का अनेकान्त या सापेक्षता का सिद्धान्त इन पर कहां तक लागू होता है? वस्तुतः पत्र/पत्रिकाएं विशिष्ट उद्देश्यों या नीतियों के आधार पर प्रकाशित की

जाती हैं जिनका निर्धारण उनके संचालक करते हैं। पत्र का स्थायित्व उसकी ग्राहक संख्या पर तो निर्भर करता ही है, संचालकों की आर्थिक क्षमता तथा विज्ञापनीयता भी इसमें योगदान करते हैं। उदाहरणार्थ संस्थागत पत्रिकाएं संस्थाओं की नीति के अनुरूप ही सामग्री का संचालन करेंगी। जातिगत पत्रिकाएं जातीय एवं उसके हित के समाचार अधिक देंगी। हां इनमें विषय वस्तु की विविधता लाने के लिए कुछ विचार प्रधान एवं उदार लेख भी हो सकते हैं पर उनका रुझान पटापेक्ष ही होगा। अनेकान्त तो सभी नयों का समन्वय है और अवक्तव्य भी है। इस दृष्टि से निरपेक्षता का अधिक मूल्य नहीं है।

जैन पत्रिकाओं की संख्या

संपर्क 2000 के अनुसार वर्तमान में जैन पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 30-35 दर्जन तक हो गई है। ये दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक किसी भी कोटि के हो सकते हैं। इनमें मासिक पत्रों की संख्या सर्वाधिक प्रायः 60 प्रतिशत है। जैनों के कुछ पत्र द्विभाषी तथा त्रिभाषी भी हैं। इन पत्रों पर आधारित पत्रकारिता की कोटियों का वर्गीकरण भी एक विद्वान ने किया है और अधिकांश के प्रति अपना क्षेत्र भी व्यक्त किया है। हम यहां पत्रों के वर्गीकरण के आधार पर पत्रकारिता का संक्षेपण करेंगे।

उक्त पत्रिकाओं के विषयगत वर्गीकरण के आधार पर मूलतः दो प्रकार की पत्रिकाएं हैं। (1) लोकप्रिय तथा (2) बुद्धिप्रिय। इनमें लोकप्रिय पत्रिकाएं 60 प्रतिशत तक है एवं फलफूल रही हैं जबकि बुद्धिप्रिय पत्रिकाएं संस्थाओं, साधुओं एवं श्रीमंतों की कृपा पर निर्भर रहती हैं। इनकी अनेक कोटियां हैं जो निम्न हैं –

सारणी 1

पत्रिकाओं का विषयगत वर्गीकरण एवं प्रतिशत :

	पत्रिका	संख्या	प्रतिशत
(1)	सूचना समाचार	100	27
(2)	धार्मिक	70	19
(3)	पक्षगत	67	18
(4)	संस्थागत	29	08
(5)	आगमी	26	07
(6)	जातिगत	24	06
(7)	विविध	12	03
बुद्धिप्रिय पत्रिकाएं :			
(8)	शोधपरक	24	06
(9)	स्वतंत्र चितन /प्रगतिशील	23	05.40
		375	99.40

सारणी 1 में से दो तथ्य प्रकट होते हैं- 1. यदि जैनों की समग्र जनसंख्या एक करोड़ मानी जावे तो प्रति 2.7 लाख जनसंख्या पर एक पत्रिका (चाहे वह किसी कोटि की हो) प्रकाशित होती है। यह अनुपात अन्य देश व जातियों की जनसंख्या (आदिम जाति छोड़कर) पर्याप्त मात्रा में कम है। इसे संवर्धित करना चाहिए।

2. लोकप्रिय पत्रिकाओं की संख्या, बुद्धिप्रिय पत्रिकाओं से लगभग 5 गुनी है जो इस शिक्षा प्रचार के युग में भी बुद्धिवाद को नकारती दिखती है।

पत्रिकाओं की विषय वस्तु

मेरे पास लगभग विविध कोटि की दो दर्जन पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। सरसरी तौर से देखने पर यह प्रतीत होता है कि उनमें अपनी कोटि

के बाबजूद विषय वस्तु की विविधता होती है। यह तीन कोटियों में विभाजित की जा सकती हैं।

(1) संघ/संस्था/जाति/साधु / गृहस्थ/पक्ष आदि से संबंधित वर्तमान एवं भावी कार्यक्रमों के समाचार। इनमें पुस्तक सूची, समालोचना तथा विज्ञापन भी सम्मिलित हैं।

(2) परम्परागत या कभी-कभी नवीन कोटि के विशेष लेखादि विवरणात्मक,भक्तिपरक एवं वर्तमान के प्रति क्षोभजनक।

सारणी 2 में कुछ पत्रिकाओं की विषय वस्तु दर्शायी गई है।

सारणी 2

	पत्रिका	कोटि	पृष्ठ	सं.	समाचार लेख	प्रति
(1)	जैन प्रचारक	समाचार	32	9	23	70
(2)	वीतराग वाणी	धार्मिक	32	8	24	75
(3)	स्वानुभूति प्रकाश	पक्षगत	20	1	19	95
(4)	जैन गजट	संस्थागत	12	10	2	17
(5)	तीर्थकर वाणी	सामाजिक संस्था	64	6	58	80
(6)	समन्वय वाणी	सामाजिक चिंतन	8	4	4	50
(7)	शाकाहार क्रांति	विविध	16	2	14	85
(8)	अनेकांत	शोध-पत्र	12	8	12	100
(9)	श्रमण	शोध पत्र	10	10	9	90
(10)	तीर्थंकर	चिंतन	32	3	29	90

सारणी 2 से स्पष्ट है कि सभी कोटि के पत्रों में कुछ न कुछ बौद्धिक सामग्री होती ही है जो उसे हलुवे में किशमिश के समान मधुरता प्रदान करती है।

सूचना समाचार पत्र

वस्तुतः सूचनात्मक समाचार पत्र मुख्यतः संस्थागत ही होते हैं, जातिगत भी होते हैं, धार्मिक तो होते ही हैं। इनमें समाचारों की

मुख्यता रहती है। कुछ पत्रों में इनकी संख्या 60 प्रतिशत तक हो जाती है। इनमें जैन गजट, जैन संदेश, जैनमित्र, सम्यग्ज्ञान, विद्वत् परिषद् बुलेटिन आदि पत्रिकाएं आती हैं। इनमें बौद्धिक सामग्री अल्प होती है, पर वर्तमान में कुछ पत्रों ने अपने रूप में परिवर्तन किया है। (जैन प्रचारक आदि)

इनमें जो बौद्धिक सामग्री होती है, वह संस्था की नीति के अनुरूप होती है।

ये पत्रिकाएं समाज के विभिन्न अंगों को प्रकट करती हैं। तथापि कुछ को छोड़ प्रायः सभी पत्रिकाएं परम्परावाद का ही पोषण करती हैं। उन्हें प्रगतिशीलता से काफी अरुचि है। इसीलिए इनकी मान्यताओं के विरोध में बुद्धिवाद के आधार पर लिखे गए लेख इनकी विभिन्न कोटि की टीकाओं के शिकार होते हैं। वे पत्रिकाएं 'जैनधर्म' को 'जनधर्म' कहती हैं, पर जन के लिए इनमें कोई स्थान नहीं हैं। दो हजार वर्ष पूर्व की प्राचीन परम्परा के आधार पर ये 'जन' मर्दन कर रही हैं। वर्तमान में वैज्ञानिक एवं वैचारिक सामाजिक एवं राजनीतिक विकास के कारण अनेक प्राचीन मान्यताएं (आर्थिकाओं की मान्यता, भ. महावीर की जन्मस्थली, कुण्डलपुर के बड़े बाबा का मूलस्थान और उनकी मूर्ति का स्थानान्तरण, साधुओं में विद्यमान शिथिलाचार, जैनों की अल्पसंख्यकता, विद्वानों के प्रति पक्ष प्रेरित अशिष्टता, निश्चय व्यवहार की मुख्य गौणता या समकक्षता भक्ष्याभक्ष्य विवाद आदि) विभिन्न कोटि के विचारकों के भक्तिवाद परम्परावाद तथा बुद्धिवाद के आधार पर विचारार्थ आकर्षित कर रही हैं। बीसवीं सदी के तीसरे चौथे दशक में हरिजन मंदिर प्रवेश, विधवा विवाह आदि की समस्यायें उठाई गई थीं। आज भी सामाजिक स्तर पर दहेज प्रथा एवं भ्रूण हत्या पर चर्चायें होती हैं पर एकीकृत रूप से

ये समाचार पत्र सामने नहीं आते, हां विरोध के स्वर कभी-कभी मुखरित करते हैं। फलतः ये समस्यायें समाज के व्यक्ति स्वयं पक्ष या विपक्ष अपनाकर हल करते जाते हैं। इन समस्याओं के समुचित समाधान के लिए अनेक प्रकार के विपक्षी स्वर गुंजायमान हो रहे हैं। पर परम्परावादी समाचार पत्रों का समाज पर इनका क्या असर हो रहा है, यह शोध का विषय है। वस्तुतः जैनों के महावीर का यह दुर्भाग्य ही है कि हमारी इतिहास निरपेक्षता की मनोवृत्ति के कारण उनके जन्मस्थान, कैवल्यस्थान एवं निर्वाण स्थली पर भी एकमत नहीं हैं। यह स्याद्वाद सिद्धान्त की मान्यता के अनुरूप है कि सभी पक्ष अपने-अपने पक्ष को ही सही कहें और विचारक पक्ष की उपेक्षा करें।

धार्मिक समाचार पत्र

धार्मिक समाचार पत्रों में 'आगम' सबसे मजबूत प्रमाण माना जाता है। इसलिए आगमी पत्रिकाएं भी इनमें समाहित कर लेनी चाहिए। वस्तुतः आगम तो तत्कालीन ज्ञान-विज्ञान के निरूपक हैं। इनकी त्रैकालिक सत्यता की मान्यता ऐतिहासिक विकास और विचार विकास की धारणा से मेल नहीं खाती। यदि ऐसा ही होता तो आगमों में ही 'स्वचतुष्टय' और 'परचतुष्टय' की चर्चा क्यों होती ?

मुझे ऐसा लगता है कि आगमपोषी व्यक्ति 'आगम' शब्द के विषय में ही भ्रांत हैं। आप्टे के शब्दकोष में इस शब्द के 16 अर्थ दिए हैं। जिनमें ज्ञान, विज्ञान, वेद, पवित्र ग्रंथ, परम्परागत ज्ञान, चारों तरफ का ज्ञान (आ+गम) ज्ञान सामीप्य (आ-समीप, गम-ज्ञान) एवं आगम प्रमाण हमारे काम के हैं। जैनों में आगम को 'श्रुत' कहते हैं। वह दो प्रकार का होता है। गणधर प्रणीत प्राथमिक एवं आचार्य प्रणीत द्वितीयक। प्रमाणता का आधार दृष्टेष्टा विरोध, युक्ति शास्त्र विरोध एवं अति संवाद है। हमने सर्वज्ञत्व की धारणा के कारण

उनकी वाणी को ही पवित्र एवं त्रैकालिक मान लिया और तीर्थंकर वाणी न होते हुए भी आगमीय आचार्यों को प्रमाण माना इसीलिए हमारा ज्ञान तालाब के जल के समान स्थिर हो गया और हम आज के वैज्ञानिक ज्ञान की तुलना में पीछे पड़ गए। यही नहीं हम समय के साथ आगम की कोटि में आगे भी बढ़ गये। हम कुन्दकुन्द वाणी को परमागम कहने लगे। फलतः आगम की मान्यता गौण हो गई, परमागम आ गया। हम अकलंक के उस वाक्य को भूल ही गये – **यो यत्र अविसंवादक, स तत्र आप्त, ततः परोऽताप्तः।** फलतः हमें आगम शब्द को व्यापक अर्थ में लेना चाहिए एवं स्वपर चतुष्टय के आधार पर अपने विचारों का युगानुकूलन करना चाहिए। फलतः धार्मिक एवं आगम पोषी पत्रों को आज की व्यावहारिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि अपनानी चाहिए। तभी हम जैन सिद्धान्तों को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बना सकेंगे। विभिन्न संस्थाओं को अपनी मात्र परम्परा पोषी नीति में कुछ उदारता लाना चाहिए। इस दृष्टि से इसे दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि अनेक विद्वान आज भी संस्थागत, पक्षगत या जातिगत होते जा रहे हैं। एक विदेशी विद्वान ने यह सही कहा लगता है जैन विद्वान वाक्चतुर हैं, उनका विद्वत्ता की ओर ध्यान नहीं है।

पक्षगत पत्रिकाएं

पक्षगत पत्रिकाओं की संख्या लगभग 18 प्रतिशत है इनमें समन्वय वाणी पत्रिका के अतिरिक्त अनेक प्रत्यक्ष या परोक्षतः साधु नामित एवं प्राचीन तथा अर्वाचीन आचार्य नामित पत्रिकाएं समाहित होती हैं। इनकी विषय वस्तु में सतत साधुजनों के उपदेश, कार्यक्रम और कुछ परम्परा पोषी धार्मिक लेख रहते हैं। इनमें विज्ञापन महत्वपूर्ण नहीं होता, भक्तजन का आधार इनकी ताकत है। इन पत्रों की परम्परापोषी नीति का एक उदाहरण शोधादर्श में प्रकाशित हुआ

है। मेरे एक मित्र ने एक जैनाचार्य से (1) पर चतुष्टय के आधार पर साधु चर्या में संशोधन (2) प्राचीन ग्रन्थों के वर्णनों का संशोधन (3) वर्तमान श्वेताम्बर आगमों की दिगम्बरों द्वारा खारिज करना (4) अनेक अन्य प्रश्न किए। सभी का उत्तर नकारात्मक था। यदि कुन्दकुन्द की अनेक मान्यताओं को उमास्वामी ने शोधित किया और हमने उसे स्वीकृत किया तो आज के आचार्य या उनकी संगीति ऐसा क्यों नहीं कर सकती ? मेरे मित्र ने जैन साधुओं को अत्यन्त गैर लचीला बताया है। उन्हें गुण के अनुरूप कुछ तो सोचना चाहिए। इस दिशा में श्वेताम्बर तेरापंथी आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के आधुनिकीकरण के प्रयत्नों से प्रेरणा लेनी चाहिए। इन पत्रों में अभी **समन्वय वाणी** की विषय-वस्तु में कुछ स्वागत योग्य स्वरूप बदला है। ये पत्रिकाएं भक्तों की प्रिय भले ही हों, पर वे बुद्धिवादी जगत को अधिक प्रभावित नहीं करतीं। ये आगम पोषी कहलाती हैं, पर वे उनकी मूलवृत्ति एवं दिशा को मानती नहीं लगतीं।

जातिगत पत्रिकाएं

ऐसा माना जाता है कि दिगम्बरों की 84 जातियां हैं श्वेताम्बरों में इससे भी ज्यादा हो सकती हैं क्योंकि आचार्य हस्तीमलजी आदि ने अनेक जातियों को जैन बनाकर उनके पृथक् नामकरण किए थे। इन जातियों में संगठन क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक जातियों से संबंधित पत्रिकाएं प्रायः छह प्रतिशत के रूप में प्रकाशित होती हैं। वस्तुतः ये पत्रिकाएं समाचार पत्रों में ही परिगणित की जानी चाहिए। यद्यपि ये जैन समाज की अंग हैं, पर ये जातीय हितों एवं सूचनाओं का संप्रसारण अधिक करती हैं। दिगम्बरों में ये पत्रिकाएं बहुत कम हैं पर श्वेताम्बरों में इस कोटि की संख्या प्रायः 75 प्रतिशत है। विदेशों में भी ऐसी पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। ये पत्रिकाएं दो काम करती है।

(1) जाति से संबंधित जानकारियां ।

(2) प्रत्येक जैन जाति को समग्र जैन जाति के अंग के रूप में दृढ़ता प्रदान करना।

इन पत्रिकाओं में बौद्धिक सामग्री कम रहती है। ये परम्परा पोषी एवं प्राचीन आगमों का ही समर्थन करती हैं।

आगमपोषी पत्रिकायें

आगमपोषी पत्रिकाएं वे हैं जो पक्षगत/पक्षातीत होकर आगमिक सिद्धान्तों अहिंसा, अनेकान्त, कर्मवाद, अपरिग्रह, श्रुतावतार आदि विषयों की निरूपण होती है। इनकी संख्या 7 प्रतिशत है। यह स्पष्ट है कि पक्ष पोषक पत्रिकायें अधिक आकर्षण की केन्द्र हैं। पता नहीं क्यों ? क्या आगमिक सिद्धान्त व्यावहारिक नहीं हैं? फिर भी ये पत्रिकायें परम्परागत सिद्धान्त ही निरूपित करती हैं, उन्हें नवीनता नहीं देतीं। आगम के अतिरिक्त ये परमागम की भी पोषक होती हैं। जहां अध्यात्ममुखता अधिक है और बहिरात्मा उपेक्षणीय है। ये स्थानांग के यगों की समकक्षता की धारणा के विपरीत है। यह आगम वाणी से भी ऊर्ध्वस्तरी बन गया है। यह मान्यता भी नयापेक्षी स्याद्वाद का एक रूप है।

इसके बाबजूद भी आगम और परमागम पोषी पत्रिकाओं का मनोवैज्ञानिक महत्व है। इससे व्यक्ति कल्पनालोक में भूतकाल में चला जाता है। उसे संसार की क्या परवाह ? ऐसा लगता है कि ये पत्रिकाएं एकांगी अधिक होती हैं और अन्य मतों/विचारों से उद्वेजित होती हैं।

विविध पत्रिकायें

ये ऐसी पत्रिकायें हैं जो जैन सिद्धान्तों के व्यावहारिक प्रयोग से

संबंधित हैं। शाकाहार क्रांति, व्यसन मुक्ति आपकी समस्या हमारा समाधान जैसी पत्रिकायें इस कोटि की हैं। ये अनेक धार्मिक मान्यताओं के पल्लवन एवं दृढ़ीकरण के लिए प्रकाशित होती हैं। इनकी संख्या मात्र 2 प्रतिशत है। इसे वर्धमान होना चाहिए।

शोधपरक पत्रिकायें

इन पत्रिकाओं की संख्या इस समय दो दर्जन तक पहुंच गई है इनमें विज्ञापन प्रायः नहीं होता। इनमें विविध कोटि की ससंदर्भ शोधपरक बुद्धिवादी सामग्री प्रकाशित होती है। यह लोकप्रिय कोटि में नहीं आती। 'जैन विद्या शोध संदर्भ' के अनुसार जैन शोध की प्रायः तीन दर्जन विधायें हैं। इनमें आधुनिक विषयों की शोध तो नाम मात्रेण 1.6 प्रतिशत ही है, पर साहित्य आदि अनेक विषयों की शोध लगभग स्थिर है। इसके अतिरिक्त अनेक साधु साध्वीगण एवं विद्वान निरुपाधिक शोध भी करते हैं। यह माना जाता है कि प्रतिवर्ष प्रायः 150 छात्र शोधरत रहते हैं, कुछ को डिग्री मिलती है, कुछ मध्यमार्ग में होते हैं निरुपाधिक शोध में भी कम से कम 50 विद्वान तो रहते ही हैं। एक शोधक प्रतिवर्ष 2 शोधपत्र भी तैयार करता है, तो लगभग 400 शोधपत्रों का औसत दो दर्जन शोध पत्रिकायें पूरा नहीं कर सकतीं। फलतः इनकी संख्या में वृद्धि होनी चाहिए। संभवतः इनकी अल्प संख्या का कारण यह हो कि यह व्यय साध्य होती हैं और बिना संस्थागत आधार के इनका नियमित प्रकाशन संभव नहीं है। इनकी संख्या वृद्धि तो एक कठिन काम है। शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित अधिकांश सामग्री प्राचीन या मध्यकालीन होती है। अब उत्तर मध्य एवं आधुनिक कालीन सामग्री भी शोध का विषय बनी है। कुछ समय से जैन विद्या में उपलब्ध वैज्ञानिक तथ्यों का सामान्य एवं तुलनात्मक विवेचन भी सामने आने लगा है। अनेक साधुजन और

विद्वान महावीर के धर्म की वैज्ञानिकता का उद्घोष करने लगे हैं अनेक तो वैज्ञानिकता लाने के लिए अपने शोधपत्रों में सूत्रों के अर्थ भी परिवर्तित करने लगे हैं। उदाहरणार्थ एक विद्वान ने **स्निग्धरुक्षत्वात् बंधः** के एक वचनी सूत्र का बहुवचनी अर्थ कर बंध की स्निग्ध रुक्ष, स्निग्ध स्निग्ध, रुक्ष रुक्ष के रूप में (आधुनिक विज्ञान की) त्रिरूपता सिद्ध कर पुरस्कार पाया। एक अन्य विद्वान कुन्दकुन्द के ग्रन्थों में रेडियो एक्टिवता देख रहे हैं। कुछ विद्वान प्रशीलन के युग में भी जैनों की भक्ष्याभक्ष्य विचारणा को अधिक प्रमाणिक मान रहे हैं।

कुछ विद्वानों ने जैन ग्रन्थों में वर्णित अविभागी परमाणु को परम सत्य माना है, जबकि पुराने आचार्य इस परम सत्य को व्यावहारिक रूप देने के लिए निश्चय और व्यवहार परमाणु मानकर उसे समय संगत बनाया है। त्रिलोक प्रज्ञप्ति तो परमाणु के साइज और आकार भी बताती है। इसप्रकार जैन विधा के वैज्ञानिक शोधों में गुणात्मकता की चर्चा खूब होती है। अध्यात्म के आधार पर इसे परावैज्ञानिक भी कहा जाता है, पर आधुनिक विज्ञान परिमाणात्मक को ही विश्वसनीय आधार मानता है। अंग ग्रन्थों तथा धवला आदि में भक्ति के जो रूप पाये जाते हैं, उनसे अनेक प्रश्न उठते हैं जिनपर शोधकों का ध्यान नहीं गया है –

(1) काल के यूनिट 'आवली' का सही मान क्या है? चार मानों में से किसे प्रमाणिक माना जावे ? (2) परमाणु की सामान्य गति क्या है ? उच्चतम तो प्रति समय लोकांत तक की है। (3) संख्येय, असंख्येय, अनंत, विशेष, विशेषाधिक, विशेषोन, हीन, ऊन आदि के समस्त अर्थों पर किसी शोधक ने विचार नहीं किया है। इनके आधार पर वर्णित शास्त्रीय विवरण बुद्धिवादी जगत के लिए बोधगम्य

नहीं होते। (4) योजन का संगतमान जिससे उसके भूगोल की आधुनिक दृष्टि से प्रामाणिकता का पता चल सके। (5) कृष्ण विवर और कृष्ण राजि के शास्त्रीय विस्तार की परिमाणात्मकता की विश्वसनीयता । (6) भगवान महावीर की 3.5 हाथ की ऊंचाई को वर्तमान (फीट, इंच, सेमी.) यूनिटों में व्यक्त करना। (7) मान, उन्मान, प्रमाण विषयक विवेचना (8) अनंत एवं अनन्तानंत तथा अनादि के मानों के अभाव में शोध की प्रवृत्ति स्तब्ध हो गई। बुद्धिवाद की सीमा आई और श्रद्धावाद को प्रश्रय मिला।

इसीप्रकार जीव विज्ञान के क्षेत्र में सत्संख्यादि सूत्र अनंत आदि के रूप में व्याख्या होने के बाबजूद भी (1) विभिन्न कोटि के जीवों की भौतिक तथा भावात्मक इंद्रियां (2) निगोद जीव की वर्तमान समकक्षता (3) विभिन्न कोटि के जीवों की जन्म विधि (4) वनस्पतियों को छोड़कर अन्य एकेन्द्रिय जीवों की सजीवता के आधार आदि पर भी शोध लेख देखने नहीं मिलते। इन विषयों पर शोधकों का ध्यान एवं शोध लेखों पर समहरण होना चाहिए। सामान्यतः विज्ञापन प्रायः नहीं होता। इनमें विविध कोटि की ससंदर्भ शोधपरक बुद्धिवादी ऐसा प्रतीत होता है कि मूर्त जगत के विवरणों की वैज्ञानिक समीक्षा अपेक्षित है। संभवतः हमें शास्त्रीय विवरणों को ऐतिहासिक दृष्टि से ही स्वीकार करना होगा। अतः ऐसे लेखों के लिए पत्रिकाओं की ओर से प्रेरणा मिलनी चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि अहमदाबाद के डॉ. अनिलजी ने नई खोजों के परिप्रेक्ष्य में गर्भजन्य और सम्मूर्छनजन्य में किंचित् परिभाषा संशोधन का सुझाव दिया है और क्लोनिंग की प्रक्रिया को नामकर्म का रूपांतरण ही बताया है।

स्वतंत्र एवं प्रगतिशील चिंतन की पत्रिकाएं

ये ऐसी पत्रिकाएं हैं जिनमें भूत, भविष्य एवं वर्तमान के लिए नये चिंतनों एवं नई दिशाओं के संकेत होते हैं। इनकी संख्या छह प्रतिशत के लगभग है। ये परस्पर असहमत विचारों को भी समाहित करती हैं। इनमें तीर्थंकर, दिशाबोध, जैन एकता, चौथा प्रहरी और धर्म मंगल के समान पत्रिकाएं आती हैं। इनमें ऐतिहासिक लेख कम होते हैं और वर्तमान समस्याओं एवं प्राचीन परम्पराओं के विश्लेषण और संवर्द्धन पर अधिक लेख होते हैं। ये पंथ निरपेक्ष होते हैं और सभी सम्प्रदायों की मुख्य घटनायें एवं लेख प्रकाशित करते हैं। ये उदारवृत्ति के प्रतीक हैं एवं जैनधर्म को आधुनिकता देने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे पत्रों की संख्या अधिक होनी चाहिए। यहीं नहीं जैन जगत और जिनेन्दु के समान समग्र जैनों का प्रतिनिधित्व करने वाली पत्रिकाओं की संख्या में भी वृद्धि होनी चाहिए।

जैन पत्रों में पत्रकारिता के रूप

जैन पत्रिकाओं के विषयगत वर्गीकरण के आधार पर जैन पत्रकारिता की निम्न विशेषतायें ज्ञात होती हैं।

(1) नयापेक्षिता: प्रायः सभी समाचार पत्र क्षेत्रीय, जातीय पत्रिकायें विशेष नीति पर आधारित होती हैं। अतः अनेक पत्रकार विशेष दृष्टि पोषित करते हैं और फलतः अनेकांती नहीं नयापेक्षी होते हैं। यह नयापेक्षिता पत्रकारिता का एक रूप है।

(2) बुद्धिप्रिय कोटि को छोड़कर प्रायः सभी पत्रिकाएं प्राचीन, आगमिक,परमागमिक या परम्परा पोषी होती हैं। जिससे श्रद्धावादी बना रहता है, यथास्थिति वादी बना रहता है। फलतः यथास्थिति वादिता का संवर्धन इसका दूसरा रूप है।

(3) आजीविका की विवशता भी उसका एक अन्य रूप है।

(4) इसका एक अन्य रूप बुद्धिप्रियता भी है, जो शोध और चिंतन पत्रिकाओं में पाया जाता है। इस कोटि को पत्रकार में अनेक कोटि के उपसर्ग सहने की क्षमता होती है।

(5) जैन पत्रकारिता के आदर्श गुणों का संकेत पहले दिया जा चुका है। इस दृष्टि से जैन पत्रकारिता आदर्शोन्मुखी होने की अपेक्षा पक्षोन्मुखी अधिक प्रतीत होती है। यह समाज के श्रद्धालु के लिए त्रासदायक है।

(समन्वयवाणी, अप्रैल 2006, प्रथम पक्ष जैन पत्रकारिता विशेषांक से साभार)

●

यह तो सर्वविदित है कि जो ताकत एक कलम में है; वह एक तलवार में नहीं है। यह तीखी कलम जब चलती है तो समाज में चेतना लाती है और उसको एक निश्चित लक्ष्य की ओर ले जाने में अपनी भूमिका निभाती है। परन्तु यही कलम यदि गलत दिशा में चलने लगती है तो वह समाज को छिन्न-भिन्न कर देती है।

विनोद शंकर दबे

पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय

जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में 'समाचार' एवं 'पत्रकारिता'

■ डॉ. अंकुर जैन, भोपाल*

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। किसी भी समृद्ध, विकसित राष्ट्र का पैमाना वहाँ के मीडिया अथवा पत्रकारिता-जगत को मिली अभिव्यक्ति की आजादी, जिम्मेदारीपूर्ण रवैया एवं लोकहितपूर्ण दृष्टिकोण से तय होता है। पत्रकारिता आज मीडिया के अर्थ में रूढ़ हो गई है। इस मीडिया शब्द का हिन्दी अनुवाद माध्यम का बहुवचन 'माध्यमों' होता है। पत्रकारिता चूंकि जनता और शासन के बीच का एक सशक्त माध्यम है, इसीलिये मीडिया शब्द पत्रकारिता के अर्थ में इतना प्रचलित बन पड़ा है। हालांकि वर्तमान में मीडिया में भी धनबल, पदबल का बाहुल्य देखने को मिलने लगा है, किंतु यह हमेशा से एक प्रतिष्ठित उद्यम रहा है। पुराने समय में पत्रकारों ने समाचार-माध्यमों का प्रयोग एक मिशन के रूप में किया, न कि प्रोफेशन के रूप में।

महात्मा गांधी कहते थे - पत्रकारिता कभी भी निजी हित या आजीविका कमाने का जरिया नहीं बनना चाहिए, पत्रकारिता का एकमात्र उद्देश्य सेवा होना चाहिए। अखबारी प्रेस एक महान शक्ति है, लेकिन जिस तरह पानी का अनियंत्रित प्रवाह पूरे देश को जलमग्न कर देता है और फसलों को तबाह कर देता है, ठीक उसी तरह एक अनियंत्रित कलम भी सेवा के बजाय तबाह करने का कार्य करता है। प्रसिद्ध पत्रकार, लेखक व कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने समाचारपत्रों के संदर्भ में कहा था कि समाचारपत्र संसार की सबसे बड़ी ताकत है, लेकिन इनके सर पर जोखिम भी कम नहीं है।

---

* आलेख संपादक, डीडी न्यूज मप्र, भोपाल
मो. - 9893408494, ई-मेल - ankurjain.anshgmail.com

पत्रकारिता के इस महत्त्व को समझते हुये, इसके प्रमुख आधार, जिसे अंग्रेजी मैं न्यूज एवं हिन्दी में समाचार कहते हैं, के लिये हमने बहुत ही पवित्र शब्द 'समाचार' का प्रयोग किया। समाचार शब्द संस्कृत का है। यह सम्+आ+चर घञ् (दो उपसर्गों, एक धातु एवं एक प्रत्यय) से बनता है। इसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ होगा- सम्यक् आचरण करना या व्यवहार करना। संस्कृत का सम् उपसर्ग सम्यक् तथा आङ् (आ) उपसर्ग चारों तरफ या भली-भाँति अर्थ देता है। चर धातु का अर्थ है- व्यवहार करना। सम्यक् आचरण अर्थात् सभी तरह से निष्पक्ष आचरण इस शब्द का मूल अर्थ हुआ। आज समाचार का जो अर्थ है उसमें यह अर्थ अन्तर्भूत है। ऐसी सूचना जो अच्छी तरह से सोच-समझ और भली-भाँति जाँच परख कर दी गयी हो, समाचार कहलायेगी और यही पत्रकारिता का प्रमुख आधार है। वास्तव में समाचार एकत्र करने और प्रदान करने का कार्य या व्यवसाय ही पत्रकारिता है।

जब पत्रकारिता का कार्य इतना गंभीर है तो इसे हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा से समझने की जरूरत है। प्रस्तुत आलेख में हम जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में समाचार एवं पत्रकारिता को समझने का प्रयास कर रहे हैं तथा ये जान रहे हैं कि जैनाचार्यों के वे कौन से सिद्धांत हैं जो पत्रकारिता एवं समाचारों की गरिमा एवं निष्ठा को अधिक उपयोगी बना सकते हैं अथवा एक संचारक के लिये किन गुणों की अनिवार्यता की बात जैन दार्शनिकों द्वारा की गई है।

इससे पहले हम जैन विद्वानों के पत्रकारीय दृष्टिकोण को समझें, हम यह जान लेते हैं कि पत्रकारिता के कौन से सिद्धांतों की चर्चा मौजूदा दौर में की जाती है। पत्रकारिता के 5 मूल सिद्धांत जिनकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा होती है, वे हैं- सत्य, स्वतंत्रता, हर पक्ष

का समावेश पर निष्पक्षता, मानवता, जवाबदेही। इन सिद्धांतों को Veritas Vos liberabit (the truth shall set you free) Independent Voice, Two sides of a coin, Humanness, ccountabilityके नाम से जाना जाता है।

चूंकि एक पत्रकार, जो संचार कर रहा है वो व्यक्तिनिष्ठ नहीं है बल्कि वस्तुनिष्ठ है और उसकी बात कई लोगों तक जा रही है, अतः पत्रकार की संचार कला अधिक जिम्मेदार, लोकोपयोगी एवं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की भावना लिये होना चाहिये, तथा इसका उद्देश्य 'समाचार' अर्थात् सम्यक् आचरण का प्रसार होना चाहिये।

समाचार, इतना पवित्र शब्द है कि जैनाचार्यों ने इस शब्द का प्रयोग मुनिराजों के आचरण के लिये किया तथा उनके नीतिशास्त्र को इस शब्द के माध्यम से निर्देशित किया। आचार्य वट्टकेर अपने ग्रन्थ मूलाचार में लिखते हैं–

समदा समाचारो सम्माचारो समो व आचारो।
सब्बेसिं हि समाणं समाचारो दु आचारो।।

अर्थात् – समता भाव समाचार है, अथवा सम्यक् अर्थात् अतिचार रहित जो मूलगुणों का आचरण, अथवा समस्त मुनियों का समान अहिंसादिरूप जो आचरण, अथवा सर्व क्षेत्रों में हानिवृद्धि रहित कायोत्सर्गादिकर सदृश परिणामरूप आचरण वह समाचार है।

यहाँ समताभाव को समाचार कहा है, अर्थात् किसी भी प्रकार के अनुराग एवं द्वेष, पक्षपात से रहित होकर बिना किसी दोष के आचरण करना समाचार है। हमने देखा है कि किसी भी जिम्मेदार पद पर आसीन होने वाला व्यक्ति यह शपथ लेता है कि वह अनुराग व द्वेष तथा पक्षपात से रहित होकर अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् रीति से निर्वहन करेगा। यह उस व्यक्ति के समाचार का ही द्योतक है। पत्रकारिता में समाचार भी इसी भावना के प्रसार के हेतु हैं।

एक पत्रकार के क्या दायित्व होने चाहिये जिससे वह जिम्मेदारीपूर्ण ढंग से अपने कार्य का निर्वहन कर सके और उसे कुशल संचारक बना सके। इसके संबंध में जैन आचार्य गुणभद्र अपने ग्रन्थ आत्मानुशासन में लिखते हैं–

प्राज्ञः प्राप्तसमस्तशास्त्रहृदयः प्रव्यक्तलोकस्थितिः
प्रास्ताशः प्रतिभापरः प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तरः।
प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः परमनोहारी परानिंदया,
ब्रूयाद्धर्मकथां गणी गुणनिधिः प्रस्पष्टमिष्टाक्षरः।।

अर्थात् जो प्राज्ञ या विद्यावान है, समस्त शास्त्रों के रहस्य को प्राप्त है, लोकव्यवहार से परिचित है, समस्त आशाओं से रहित निःस्पृह है, प्रतिभाशाली है, शांत है, प्रश्न होने से पूर्व ही उसका उत्तर जान चुका है, श्रोता के प्रश्नों को वहन करने में समर्थ है या पाठक अथवा श्रोता के मंतव्य को जानकर उसकी जिज्ञासाओं/प्रश्नों का समाधान देने वाला हो, दूसरों के मन को हरने वाला हो, अनेक गुणों का स्थान है, ऐसा आचार्य दूसरों की निंदा न करके स्पष्ट एवं मधुर शब्दों में धर्मोपदेश देने का अधिकारी होता है।

इस श्लोक में हमें वक्ता या कहें कि समाचार–प्रदाता के गुणों के दर्शन होते हैं, उसके जिम्मेदार रवैये की झलक मिलती है। श्लोक के अंत में धर्मोपदेश देने का अधिकारी लिखा है। वास्तव में समाचार किसी धर्मोपदेश से कम नहीं है, धर्म की वृद्धि और अधर्म का नाश– यह समाचारों का दायित्व है। यहाँ धर्म से आशय कोरे क्रिया–कांड अथवा पूजा–पद्धति नहीं, बल्कि मानवीय एवं आत्मिक गुणों की अभिवृद्धि ही धर्म है।

इसके साथ ही एक पत्रकार अथवा समाचार–प्रदाता को अपने लेखन अथवा प्रस्तुतीकरण में अध्ययन, अवलोकन, युक्ति एवं

अनुभव का समावेश भी करना चाहिये। स्वयं विविध चीजों को अनेक माध्यमों से पढ़कर समझें, विद्वत्जनों के या गुरुजनों के परामर्श व अभिमतों को जानें जिससे योग्य परंपरा ही आगे बढ़े, तर्क की कसौटी पर अपने प्रस्तुतीकरण को परखे तथा स्वयं अपने लिखे अथवा कहे हुये को अनुभव के धरातल पर जाने, तभी एक कुशल संचार संभव है।

जैन आध्यात्मिक ग्रन्थ जिसे परमागम की संज्ञा प्राप्त है ऐसे समयसार में आचार्य कुन्दकुन्द अपने संपूर्ण निजवैभव से अभिधेय विषय का प्रतिपादन करने का संकल्प लेते हैं, उनके निजवैभव की व्याख्या करते हुये समयसार ग्रन्थ के टीकाकार भी इन्हीं चार बातों को प्रमुखता देते हैं। वे निजवैभव में आगम का अभ्यास, परापर गुरुओं का उपदेश, युक्ति का अवलंबन और स्वानुभव इन चार बातों का समावेश करते हैं तथा उपदेश को सुनने वालों से अपने अनुभव से इस प्रतिपादन को प्रमाण करने का तथा किसी भी तरह का छल या मिथ्या अर्थ ग्रहण न करने का आग्रह करते हैं। इस संकल्प में वक्ता का अध्ययन, कृतज्ञता- बोध, युक्तिसंगतता, अनुभव एवं विनम्रता जैसे गुणों के दर्शन होते हैं। ये गुण यदि पत्रकार में भी हों तो यह पत्रकारिता को प्रभावी, जनोपयोगी एवं जिम्मेदार बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

इसी तरह पत्रकारिता में टारगेट ऑडियंस का महत्त्व काफी ज्यादा होता है मतलब आपका लक्षित पाठक या दर्शक वर्ग के हिसाब से प्रस्तुतीकरण किया जाये। इस विषय में कुरल काव्य नामक जैन ग्रन्थ में आचार्य, वक्ता का दायित्व निभाने वाले को उपदेश देते हैं कि-

भो भो शब्दार्थवेत्तारः शास्तारः पुण्यमानसाः।
श्रोतृणां हृदयं बीक्ष्य तदर्हा ब्रूत भारतीम्।।
विद्वदगोष्टयां निजज्ञानं यो हि व्याख्यातुमक्षमः।
तस्य निस्सारतां याति पांडित्यं सर्वतोमुखम्।।

ऐ शब्दों का मूल जानने वाले पवित्र पुरुषो! पहले अपने श्रोताओं की मानसिक स्थिति को समझ लो और फिर उपस्थित जनसमूह की अवस्था के अनुसार अपनी वक्तृता देना आरंभ करो। जो लोग विद्वानों की सभा में अपने सिद्धांत श्रोताओं के हृदय में नहीं बैठा सकते उनका अध्ययन चाहे कितना भी विस्तृत हो, फिर भी वह निरुपयोगी ही है।

उक्त कथन में हमें लक्षित पाठक/दर्शक वर्ग की अभिरुचियों, ज्ञानात्मक स्तर एवं परिस्थिति के अनुरूप उपदेश देने की सीख मिलती है। यह शिक्षा पत्रकारिता के पेशे के लिये भी काफी जरूरी है। इसी तरह पत्रकार को विविध पक्षों को

ध्यान में रखकर निष्पक्षता के साथ अपनी बात रखना चाहिये। वास्तव में निष्पक्षता में सत्य का पक्ष स्वतः गर्भित होता है। इस समीचीनता को बनाये रखने में जैनधर्म का अनेकांतवाद या स्याद्वाद का सिद्धांत बहुत उपयोगी एवं सर्वजन कल्याणकारी है।

वस्तुतः जगत में दो ही वाद हो सकते हैं– एक अनेकांतवाद और दूसरा आतंकवाद। जहाँ अपने पूर्वाग्रहों या दुराग्रहों का इतना जोर हो कि हम अन्य पक्ष को समझना ही न चाहें– ऐसी पत्रकारिता सदैव निरंकुशता, वैमनस्य एवं विसंगतियों को ही बढ़ावा देगी। अनेकांतवाद का जैन सिद्धांत वह दृष्टिकोण देता है जिससे हम विविध पक्षों को समझकर निष्पक्षता के साथ अपने प्रयोजन की सिद्धि कर सकें, यह भी पत्रकारिता का मुख्य ध्येय है।

इस तरह हम देखते हैं कि पत्रकारिता के जिन मूल सिद्धांतों की चर्चा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर की जाती है– ऐसे सत्यता, निष्पक्षता, स्वतंत्रता, मानवता और जवाबदेही जैसे सिद्धांत जैन आचार्यों ने तो प्रदान किये ही हैं, इन्हें समाविष्ट करते हुए कई अन्य आवश्यक पत्रकारीय गुणों का प्रस्तुतीकरण भी उन्होंने अपने उपदेश में दिया है जिससे समाचार अथवा सम्यक् आचरण का योग्य प्रसार हो सके और उससे एक संवेदनशील, सहिष्णु, जिम्मेदार समाज का निर्माण हो सके।

संक्षेप में यहाँ कुछेक बिन्दुओं के माध्यम से पत्रकारिता पर जैन आचार्यों का दृष्टिकोण बताने का प्रयास किया है, वास्तव में तो जैन विद्वानों, दार्शनिकों के व्यापक साहित्यिक अवदान का जब हम अवलोकन करेंगे तो इनमें हमें कई ऐसे आवश्यक मूल्यों के दर्शन होंगे जो कि पत्रकारिता को, लोकतंत्र को, समाज को और व्यक्तिविशेष को अधिक उन्नत बना सकते हैं।

अतः समाजोपयोगी विभिन्न विषयों एवं पहलुओं को जैन आचार्यों के दृष्टिकोण से समझने की बेहद आवश्यकता है। पत्रकारिता भी इन विषयों में से एक है।

●

वर्तमान में जैन पत्रकारिता की दशा तो दयनीय है ही दिशा से भी यह भटकी हुई है क्योंकि अधिकांश पत्र-पत्रिकाएँ किसी न किसी पंथ और सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। इस कारण वे वीतरागी धर्म और सामाजिक एकता के साथ निष्पक्ष रहकर धर्म और समाज का सही-सही मार्गदर्शन कर पाने में सक्षम नहीं है।

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जैनधर्म और संस्कृति के संरक्षण में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान

■ डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा, कोलकाता

जन भावनाओं की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है पत्रकारिता। जन चेतना के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान सर्वज्ञात है। वह जन चेतना चाहे राजनैतिक हो या सामाजिक, सांस्कृतिक हो या धार्मिक; किसी भी क्षेत्र में जनचेतना में पत्रकारिता के योगदान को दरकिनार नहीं किया जा सकता।

हमारे प्रेरणास्त्रोत एवं जैन पत्रकारिता के आदर्श डॉ. नेमीचंद जैन पत्रकारों की बुनियादी भूमिका के विषय में बताते हुए लिखते हैं- पत्रकार का बुनियादी काम समाज का पथ-प्रदर्शन करना है। वह मूलतः उस माली की भांति है, जो पौधे की साज-संभाल, देखभाल करता है और उन्हें विकास का हर संभव अवसर उपलब्ध कराता है। पौधे को होने वाले हर नुकसान पर उसकी नजर रहती है और वह उनकी हर धड़कन को अपनी धड़कन समझता है।

विगत लगभग 150 वर्षों के नव जागरण युग में जैनधर्म और जैन संस्कृति के उन्नयन में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं उनके प्रचार-प्रसार का महत्त्वपूर्ण योगदान माना जा सकता है। श्री अगरचन्द नाहटा के अनुसार सन् 1875 विक्रम संवत् 1932 में अहमदाबाद से गुजराती भाषा में प्रकाशित मासिक पत्र जैन दिवाकर प्रकाशक छगनलाल उम्मेदचंद्र संभवतः जैन समाज का सर्वाधिक प्राचीन पत्र है, जो करीब 10 वर्ष तक निकला था। इसके बाद सन् 1876 में केशवलाल शिवराम जैन जैन सुधारस नामक पत्र निकला, जो मात्र एक ही वर्ष निकल पाया था। उक्त दोनों पत्र श्वेताम्बर जैन

समाज द्वारा गुजरात की धरती से गुजराती भाषा में निकले थे। इसके बाद सन् 1884 में श्री जैनधर्म प्रवर्तक सभा अहमदाबाद द्वारा 'स्याद्वाद सुधा' नामक पत्र निकला। कुछ वर्ष बाद भावनगर से जैन हितेक्षु सभा द्वारा जैन हितेच्छु पत्र निकला। ये सभी पत्र अब बंद है।

दिगम्बर जैन समाज का सर्वप्रथम जैन पत्र फारूखनगर (हरियाणा) से चौधरी ब्र. जीवालाल जैन ज्योतिष द्वारा सन् 1884 के प्रारंभ में हिन्दी भाषा में जैन एवं उर्दू भाषा में जीयालाल प्रकाश साप्ताहिक है। इसी वर्ष 1884 में सोलापुर से सेठ रावजी हीराचंद नेमचंद दोसी ने गुजराती हिंदी मराठी त्रिभाषा में जैन बोधक मासिक का प्रकाशन प्रारंभ किया जो वर्तमान में जैन पत्र–

पत्रिकाओं में सर्वाधिक प्राचीन एवं अनवरत प्रकाशित पत्र है। जैन पत्रकारिता का यह प्रारंभिक काल था।

आज से करीब एक शताब्दि पूर्व हमारा जैन समाज अनेक प्रकार की अंधश्रद्धाओं, रूढियों एवं मिथ्या मान्यताओं से जकड़ा हुआ समाज था। समाज में व्याप्त पाखण्ड और आडम्बर समाप्त हो, समाज को सही दिशा मिले, समाज का नव निर्माण हो, समाज सुगठित संगठित हो, सही धर्म को समझ कर अपना स्व कल्याण करें, इन सब भावनाओं से ओतप्रोत होकर बीसवीं सदी के युग पुरुष सेठ मानिकचंदजी पानाचंदजी ने संवत् 1900 में दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा की स्थापना की तथा 'जैन मित्र' साप्ताहिक का जनवरी 1900 से प्रकाशन प्रारंभ किया।

इस पत्र के माध्यम से पं. गोपालदासजी बरैया, पं. नाथूरामजी प्रेमी, ब्र. शीतलप्रसादजी, पं. परमेष्ठिदासजी एवं बाद में मूलचंदजी कापड़िया सदृश अनेक मनीषियों में समाज सुधार, राष्ट्रीय–सामाजिक आंदोलन, तीर्थ रक्षा आंदोलन, दस्सा पूजा अधिकार,

स्त्री-शुद्धि का समर्थन, जाली ग्रंथों का भण्डाफोड़ और उनकी समीक्षा, छद्म-मुनि-वेषधारियों का, गजरथ का, मृत्यु भोज आदि का विरोध आदि अनेक युगान्तकारी प्रवृत्तियों को मूर्त रूप देने का गौरव प्राप्त किया।

सन् 1895 में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा ने बाबू श्री सूरजभान जैन, देवबन्द के सम्पादन में अजमेर में 'जैन गजट' साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ किया, जिसकी तत्कालीन जैन समाज को संगठित करने में महनीय भूमिका रही। इस पत्र का आज भी लखनऊ से निरन्तर साप्ताहिक प्रकाशन जारी है। जैन गजट के सम्पादक समय के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान रहते आये हैं यथा पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार, पं. बनारसीदासजी, पं. मक्खनलालजी, पं. खूबचंदजी, पं. बंशीधरजी शास्त्री, पं. इन्द्रलालजी शास्त्री, पं. अजित कुमारजी, पं. कुंजीलालजी, पं. श्यामसुन्दरलालजी, प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी, श्री कपूरचंदजी पाटनी आदि।

जैन विषयों पर प्रथम शोध पत्रिका का प्रकाशन सन् 1892 में पं. पन्नालालजी बाकलीवाल ने मुरादाबाद से जैन हितैषी नाम से हिन्दी और ऊर्दू में शुरू किया। यह पत्रिका बेहद सशक्त एवं स्तरीय पत्रिका थी। दस वर्षों तक उन्होंने इसका सम्पादन किया। श्री पन्नालालजी बाकलीवाल जैन समाज के महान उपकारक, जैन संस्कृति के महान प्रचारक एवं जैन पत्रकारिता के गुरुणाम गुरु थे। वे सर्वथा निस्पृही एवं बाल ब्रह्मचारी थे। बंबई से लेकर कलकत्ता पर्यंत

सम्पूर्ण उत्तर भारत उनकी कर्मभूमि थी। वर्धा से सन् 1897 में देश हितैषी और सन् 1923 में कलकत्ता से बंगला भाषा में उन्होंने जिनवाणी जैसे पत्रों को चलाया।

पं. नाथूरामजी प्रेमी उन्हीं के शिष्य एवं सहायक थे। सन् 1904 में जैन हितैषी का प्रकाशन और सम्पादन का कार्य जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई से श्री नाथूरामजी प्रेमीजी करने लगे। सारमेय चरित्र, बफ चरित्र जैसी तीखी व्यंग्यात्मक किंतु सटीक कविताएँ उसमें छपती थीं तो साथ ही शोध-खोज पूर्ण लेखों की भी यह पत्रिका सर्वप्रथम एवं उत्तम प्रयोगशाला बनी। उन सबका नवीनतम रूप कालान्तर में प्रेमीजी की प्रसिद्ध पुस्तक जैन साहित्यकार और इतिहास में संग्रहित है।

पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार भी श्री पन्नालालजी बाकलीवाल के ही शिष्य थे। जैन शोध पत्रिकाओं में श्री जुगलकिशोरजी मुख्तार और बाबू कामताप्रसादजी ने वीर सेवा मंदिर दिल्ली से प्रकाशित अनेकान्त एवं जैन संघ के त्रैमासिक पत्र शोधांक के माध्यम से जैनधर्म/दर्शन की महनीय सेवा की है।

बुलन्दशहर से ब्र. शीतलप्रसादजी द्वारा सम्पादित सनातन जैन और बंबई से प्रकाशित साप्ताहिक जैन प्रकाश की भी इस कालखण्ड में विशेष भूमिका रही।

स्वतंत्रता पूर्व के ख्यातिनाम पत्रकारों में पं. पन्नालालजी बाकलीवाल, पं. नाथूरामजी प्रेमी, पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार, बाबू कामताप्रसादजी, डॉ. ज्योतिप्रसादजी, पं. कैलाशचंदजी शास्त्री, ब्र. शीतलप्रसादजी, डॉ. हीरालालजी, डॉ. ए.एन.उपाध्ये, चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ, पं. परमेष्ठीदासजी आदि नाम प्रमुख हैं।

इस प्रारंभिक काल के जो तीन पत्र आज भी अनवरत प्रकाशित हो रहे हैं, उनके नाम हैं – जैन बोधक, जैन गजट और जैन मित्र।

सन् 1934 में भा.दि. जैन शास्त्रार्थ संघ ने जैनदर्शन पाक्षिक प्रारंभ किया, जिसका मुख्य उद्देश्य जैनधर्म पर लगने वाले आक्षेपों का धारावाहिक रूप में जवाब देना था। 23 नवम्बर 1939 से संघ ने जैन संदेश का प्रथम अंक प्रकाशित किया।

जैन संदेश के कुछ लब्धप्रतिष्ठ सम्पादकों में पं. श्री कैलाशचंदजी शास्त्री, पं. बलभद्रजी, पं. जगन्मोहनलालजी शास्त्री, पं. कन्छेदीलालजी, डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, डॉ. दरबारीलाल कोठिया, पं. लाल बहादुर शास्त्री, श्री रतनलाल कटारिया, डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री, पं. नाथूलालजी शास्त्री आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् संस्था के अंतर्गत 8 नवम्बर 1923 से 'वीर' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्र ने निर्भीकतापूर्वक मृत्युभोज, बेमेल विवाह तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई तथा अन्तर्जातीय विवाह व दस्सा पूजाधिकार के लिए प्रचार किया। इस पत्रिका का सम्पादन करने का श्रेय अनेक वरिष्ठ विद्वानों को मिलता रहा है, जिनमें प्रमुख नाम हैं श्री गणेशप्रसादजी वर्णी, पं. महेन्द्र कुमारजी, पं. नाथूरामजी प्रेमी, अयोध्याप्रसादजी गोयलीय, पं. परमेष्ठीदासजी, डॉ. ज्योतिप्रसादजी, श्री अक्षयकुमार जैन और श्री पारसदासजी जैन आदि।

आधुनिक काल खण्ड

सन् 1948 से लेकर वर्तमान काल खण्ड में अनेक जैन पत्रों का उदय हुआ, परंतु दीर्घजीवी पत्रों की संख्या बेहद अल्प है। इस कालखण्ड के सर्वाधिक लब्धप्रतिष्ठ नाम में डॉ. नेमीचन्द जैन, इंदौर

का नाम प्रमुख है। पत्रकारिता के माध्यम से उनका शाकाहार-अहिंसा के क्षेत्र में अवदान अतुलनीय है। उनके द्वारा लिखित अण्डे सौ तथ्य, शाकाहार सौ तथ्य, मांसाहार सौ तथ्य आदि छोटी-छोटी पुस्तकों के माध्यम से जैन जीवन शैली को जन-जन तक पहुँचाने में उल्लेखनीय सफलता मिली। शाकाहार क्रान्ति पत्रिका ने आहार के क्षेत्र में अहिंसक क्रान्ति का जहाँ बिगुल फूंका, वहीं 'तीर्थंकर' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने धार्मिक अस्मिता को पुर्नजीवित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

धर्म का कार्य जोड़ना है, तोड़ना कदापि नहीं। जैन पत्रकारिता को भी इस संभावना पर विचार करना होगा, तभी जैनधर्म दर्शन के विश्व हितकारी तत्त्व दुनियां के सामने सफलता से आगे आ पायेंगे। निश्चित ही इस धर्म में एक ऐसी संवादिता की क्षमता है, जो आधुनिक जीवन की तमाम विषमता, वेदना और विफलताओं का निराकरण करने में सक्षम है।

जैन पत्रकारिता का प्रारंभ मिशनरी भावना से प्रेरित है। जैन पत्रकारिता व्यवसाय न होकर, एक विचार है, जीवन पद्धति है।

- जैन पत्रकारिता प्रस्तुतिकरण में आज बहुत पीछे है, परन्तु साथ ही यह भी सत्य है कि वह वैचारिकता में अग्रणी है।
- वर्तमान में जैन पत्रिकाएँ, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, बंगला, कन्नड़ और तमिल भाषाओं में प्रकाशित हो रही हैं।
- जैन पत्रकारिता के समक्ष फिलहाल दोहरी चुनौती है, विभिन्न क्षेत्रों में आ रही गिरावट को भी रोकना है तथा साथ ही मौलिक नैतिक मूल्यों को लौटाना भी है।

आज जैन सिद्धान्त और जैनी श्रावक अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं।

हमारी अहिंसा मात्र रसोई तक सीमित होकर रह गई है। वैचारिक अहिंसकता हमारे अंदर नहीं दिखाई देती।

अपना जैनत्व भूलकर हम वैदिकीकरण से ग्रसित होते जा रहे हैं।

भक्ति का वैदिकीकरण स्पष्ट देखा जा सकता है।

हमारी कथनी और करनी में फर्क आ गया है।

अनेकान्त, स्याद्वाद और अपरिग्रह कोरे सिद्धान्त की बातें रह गई हैं।

अतः पत्रकारों के समक्ष गंभीर चुनौती है।

डॉ. ज्योतिप्रसादजी जैन के यह विचार आज भी सामयिक हैं –

कुछ पत्रिकाओं का स्तर संतोषप्रद है, यह कहना कठिन है। निर्भीक, समीक्षा, स्वस्थ विचारशीलता, सहानुभूतिपूर्ण तथ्यपरक समालोचना, सुधार प्रियता, प्रगतिगामिता, विचारोत्तेजक स्वतंत्र चेतना, सम्यक् मूल्यों का युक्तियुक्त सुरुचिपूर्ण में यदा कदा, कभी कभार अल्प परिमाण में ही प्राप्त होते हैं।

इन पत्र–पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या और क्षेत्र भी सीमित है। लेखकों को कहीं कोई प्रोत्साहन नहीं है। हमारी समझ में समाज के प्रबुद्ध वर्ग को इस संबंध में गंभीरता से विचार करना चाहिए।

(जैन सवांद, जुलाई–2018 से साभार)

●

प्रेस जनमत निर्धारण का सशक्त माध्यम है। अत: पत्रकार बंधओं को अपना कार्य ट्रस्ट समझकर जनहित की सेवा और सुरक्षा की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हुए करना चाहिए। उसे मानवीय मूल्यों और सामाजिक अधिकारों का सतत आदर करते हुए अपने पेशे को पुनीत कर्त्तव्य मानकर निष्ठावान और न्यायनिष्ठ होना चाहिए।

पत्रकारिता व्यवसाय है, व्यापार नहीं

■ नीरज जैन, सतना

बीसवीं शताब्दि के प्रारंभ में परतंत्र भारत में स्वतंत्र पत्रकारिता का जन्म आत्म बलिदान का साहस रखने वाले महापुरुषों के द्वारा हुआ था। यानि यह कमाई का साधन नहीं सर्वस्व त्याग का मार्ग था। **घर फूंके जो आपनो, चलै हमारे संग।** इसीलिए सर्वश्री गोपालकृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, महामना मालवीय, महात्मा गांधी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे चुनिंदा आत्म बलिदानी और साहसी महापुरुष ही उस भवन की नींव के पत्थर बन पाए।

स्टूडियो में अपना फोटो बनवाने पर यदि हमें उसमें कोई विद्रूपता दिखाई दे तो हम फोटोग्राफर से शिकायत कर सकते हैं, फोटो के दोष निकलवाकर या दूसरा फोटो बनवाकर संतुष्टि भी प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु यदि उसी केमरामैन द्वारा लिए गए एक्सरे ग्राफ में टीवी के धब्बे या कैंसर की गांठें दिखाई दें तो हम केमरामैन को दोष देकर, ब्रश फेरकर गांठें हटवाकर निरोग तो नहीं हो सकते। एक दूसरा सपाट या नियोजित एक्सरे निकलवाकर निश्चिन्त हो जाना भी समझदारी नहीं होगी। वह घातक बीमारी हमारे भीतर है और हमें उससे मुक्त होना ही है, ऐसा सोचकर जो लोग संकल्पपूर्वक उस दुष्ट कुष्ट के प्रतिकार में जुट जाते हैं वही उससे उबर पाते हैं।

पत्रकार का धर्म भी केमरामैन के धर्म जैसा ही है। समाज को आईना दिखाते चलना उसका कर्तव्य है जो उसे हमेशा हिम्मत और ईमानदारी से स्पष्टता के साथ करना चाहिए। वह समाज की अच्छाईयों और उपलब्धियों को सतरंगा बनाकर समाज के सामने प्रस्तुत करे यह तो ठीक है परन्तु पत्रकार को जब और जहां आवश्यक लगे तब और तहां उसे एक्सरे लैंस का प्रयोग करके समाज

में व्याप्त रूढ़ियों, मूढ़ताओं और उसके भीतर की सड़ांध को भी उजागर करने का ईमानदार प्रयत्न करते चलना चाहिए। ऐसा किए बिना वह अच्छा व्यापारी तो कहला सकता है, परन्तु पत्रकारिता के पवित्र व्यवसाय की पत रखने वाला ईमानदार और सार्थक पत्रकार नहीं कहला सकता।

समय बदल गया है। परिस्थितियां बदल गई हैं और कुछ अलग प्रकार की समस्याएं हैं जो पत्रकारिता के मार्ग में कांटे बिछाकर पत्रकार की यात्रा को दुर्गम बनाती चलती हैं। राजनीति के खग्रसी ग्रहण ने भी इस लोकोपकारी यज्ञ की आत्मा को स्पंदनहीन करने में अपना चमत्कार दिखाया है। मीडिया की नव विकसित विस्मयकारी तकनीकों की ओर से मानव के मन मस्तिष्क और उसके श्रम की सार्थकता को रोज नई चुनौतियां मिल रही हैं। आज इस व्यवसाय में आई उन विसंगतियों को पहचानकर उनका उन्मूलन करने की चिन्ता या वैसा कौशल किसी के पास नहीं है। वह पत्रकार का धर्म है किन्तु अर्थतंत्र की दासता स्वीकार करके कौन सा धर्म सुरक्षित रह सकता है? आज जैन पत्रकारिता के साथ भी लगभग वही हो रहा है।

पत्रकार को अपनी कुशलता के लिए एक बात ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है। यह जगत की रीति है कि कुरूप व्यक्ति को आईना दिखाएं तो वह अपनी कुरूपता पर शर्मिन्दा होने के बजाए दर्पण को ही तोड़ने के लिए झपटता है। पत्रकार के साथ भी ऐसा ही होता है कि सामने वाला एक्सरे में दिखने वाली अपनी आंतरिक विद्रूपता में सम्पादक, लेखक या टिप्पणीकार का ही दोष देखता है, उसे अपना विरोधी मान बैठता है। फिर अपने असली रूप में प्रगट होकर उसकी निन्दा में जुट जाता है या उसके हाथ–पैर तोड़ने तुड़वाने पर आमादा हो जाता है। वह हिंसा के माध्यम से ही क्यों न हो आपको अहिंसा का पाठ पढ़ा देना अपना पुनीत कर्तव्यमान बैठता है।

जैन समाज में ऐसा हुआ है और हो रहा है। जैन संदेश के सम्पादक डॉ. कन्छेदीलाल और तीर्थकर के सम्पादक डॉ. नेमीचन्द जैन के ताजा उदाहरण हमारे सामने हैं। इसलिए मेरा परामर्श है कि जैन पत्र के सम्पादकों को वर्तमान परिस्थितियों में ठकुर सुहाती पद्यति से ही अपनी कलम चलाते चलना चाहिए या फिर यथार्थ पत्रकारिता के लिए संकल्पित होने के पूर्व उसके इस सम्भावित परिणाम पर गंभीरता से विचार करके ही कोई व्रत लेना चाहिए। यह विश्वस्त और उपयोगी परामर्श है क्योंकि अनुभवी और भुक्तभोगी की कलम से ही लिखा जा रहा है।

यह देखकर अचरज होता है कि इस सबके बाबजूद कुछ पत्र हैं जो खरा और कडुवा सच समाज के सामने रखने की हिम्मत कर रहे हैं। डॉ. नेमीचन्द के जाने से उस प्रकार की कोशिश करने वाली शक्ति का एक आधार तो सरक गया है। प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी अपनी लेखनी में पैनापन ला रहे थे, परन्तु सुबह-शाम जुदे-जुदे मुखौटे धारण करने के आदी प्रायोजकों को वह कैसे सहन हो सकता था। प्रो. लीलावती पत्रकारिता के संयम और संतुलन का अतिक्रमण कर जाती हैं इसलिए उनका प्रभाव बनकर नहीं रह पाया। रमेश कासलीवाल काफी निर्भीकता से कलम चला रहे हैं सूझबूझ और बेलौस कथन दोनों का मेल वीर निकलंक के पन्नों पर देखने को मिला है। कई बार उनके साहस की प्रशंसा करने का मन होता है, परन्तु उन्हीं की कुशल कामना बीच में बाधक बनकर खड़ी हो जाती है।

समन्वय वाणी ने जबसे अपने सीमित दायरे से बाहर निकलने का प्रयत्न किया है तबसे उसने हम जैसे पाठकों को भी आकर्षित किया है। कई बार इसने समाज को कटु सत्य से अवगत कराकर तथाकथित संतों महंतों को भी आईना दिखाने

का काम किया है। हमने हर बार ऐसे प्रयत्नों की सराहना की है या करने का मन बनाया है। इस सरोकार को तुम (अखिल बंसल) बढ़ा सकोगे ऐसी आशा है। इस सौगंध को निभाने के लिए निर्भीकता के साथ निष्पक्षता की आवश्यकता होती है वह तुम्हारे भीतर है, उसका उपयोग करते रहोगे तो प्रकाश की कुछ नई किरणें फूटेंगी इसमें हमें कोई संदेह नहीं है।

आज सारा वायुमंडल परिग्रह लुब्धता की सडांध से प्रदूषित हो रहा है और लगता है कि सारे कुंओं में भांग पड़ गई है। ऐसे प्रदूषित वातावरण में किसी भी व्यवसाय को निर्दोष बनाए रखना लगभग असंभव हो जाता है तब पत्रकारिता की गुणवत्ता को कैसे बचाया जाए यह महत्वपूर्ण और अहम सवाल है। ऐसी अनीतिपूर्ण और न्याय विहीन परिस्थितियों में अपने आपको ऐसा पत्रकार बनाए रखने की कोशिश दुससाहस से कम नहीं है। जो गिने चुने दुस्साहसी इसके प्रति आशावान हैं और ऐसे प्रयासों में लगे हैं वे प्रशंसा के पात्र हैं उनके लिए सदा हमारी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

(समन्वयवाणी, अप्रैल 2006, प्रथम पक्ष जैन पत्रकारिता विशेषांक से साभार)

जैन पत्रकारिता का धरातल अब भी मुख्यतया धार्मिक बना हुआ है। उसे विस्तृत सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ने की बड़ी आवश्यकता है। जिसप्रकार जैनधर्म अपने में विराट मानव मूल्यों को समाहित करके भी संकीर्ण घेरे में बंदी है। उसीप्रकार जैन पत्र भी अपनी विचार सामग्री में मानव मूल्यवाही जीवन निर्माणकारी सामग्री संजोकर भी सामान्यत: जैन पाठकों तथा सम्प्रदाय विशेष तक ही अलग-अलग वर्गों में सीमित है।

– डॉ. नरेन्द्र भानावत

जैन पत्रकारिता : स्वरूप और समीक्षा

■ कपूरचन्द पाटनी, गोहाटी

पत्रकारिता को समाज का चौथा स्तम्भ माना जाता है। अतः जैन पत्र-पत्रिकाओं से सम्बद्ध सभी पत्रकार सम्पादकों का यह नैतिक दायित्व बन जाता है कि वे जैन संस्कृति व जैन दर्शन के संरक्षण एवं संवर्द्धन में सहायक बनें तथा श्रमण संस्कृति की गौरव गाथा को अक्षुण्ण बनाए रखने में अपनी भूमिका एवं जिम्मेदारी को समझें तथा समाज के एक सजग प्रहरी की भूमिका को निष्पक्ष एवं निर्भय होकर अदा करें।

जैनधर्म स्याद्वाद एवं अनेकान्त सिद्धान्त का पक्षधर है। अतः किसी पूर्वाग्रह एवं हठाग्रह से समाज में विषमता फैलाने वाले एक पक्षीय समाचारों से बचना चाहिए।

स्वस्थ पत्रकारिता का तकाजा है कि समालोचना व्यक्तिपरक न होकर उद्देश्यपरक हो तथा विचार स्वातंत्र्य को बनाए रखते हुए मतभेद को मनभेद न बनने दें विपक्ष की बात को गंभीरता से सुनने का संयम एवं धैर्य बरतें। भाषा मर्यादित एवं आगमानुकूल रखें। अपने पाठकों को विचार-समाचार परोसें उन पर थोपें नहीं।

इसप्रकार यदि सभी पत्रकार अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं तो सचमुच एक बड़ी ताकत बनकर समाज में अनेक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न कराने में सक्षम हो सकते हैं। आज हमारा समाज किन विकृतियों की गिरफ्त में हैं, जीवन शैली में किसप्रकार अहिंसा से दूरी बढ़ती जा रही है, समाज के प्रांगण में करुणा, दया, अहिंसा, नैतिकता, शाकाहार आदि की फसल क्यों नहीं उग पा रही है? समाज में धर्म प्रभावना के नाम पर उत्सवप्रियता एवं सांस्कृतिक

कार्यक्रम के नाम पर फूहड़पन किस कदर तेजी से फैल रहे हैं। जैन सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के क्षण के इन क्षणों में सम्पादक पत्रकारों की महनीय भूमिका है, गहन उत्तरदायित्व है।

जैन धर्मावलम्बियों की जनसंख्या के अनुपात में पत्र-पत्रिकाओं की बड़ी संख्या में प्रकाशन उनकी धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक निष्ठा और जाग्रत चेतना का प्रतीक है। देश में लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में प्रत्येक क्षेत्र से जैन पत्र प्रकाशित होते हैं। साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक करीब 150 की संख्या में हैं। जैन पत्रकारिता के दो मुख्य पक्ष हैं - वैचारिक और समाचार प्रेषणीयता। वैचारिकता में जैन पत्रकारिता मुख्यतः धर्म, दर्शन और तत्व विश्लेषण तक सीमित है।

जैन पत्रकारिता व्यवसाय न होकर एक विचार है। एक जीवन पद्यति है। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में और भारतीय लोक जीवन तथा धर्म के साक्षात्कार में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। जैन पत्रकारिता अहिंसक विचार, सेवाकार्य, वात्सल्यभाव, आध्यात्मिक स्फूरणा, नैमित्तक उन्नयन, शाकाहार, जीवदया, क्षमा, सहिष्णुता, प्रेम, मैत्री और अनेकान्त जैसे उत्कृष्ट मूल्यों के विकास के लिए समर्पित है।

निष्कर्षतः जैन पत्रकारिता की स्थिति निराशाजनक नहीं है। इसमें सतत विकास शीलता और नित्य नवीनता का बोध है। देश में शायद ही कोई ऐसा समुदाय हो जो इतने अल्पमत में होकर भी इतनी बड़ी संख्या में पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित करता हो। स्वस्थ पत्रकारिता के लिए सद्विचारों से युक्त मानव मूल्यों का संवाहक होना अपेक्षित है और इसके लिए खण्डन-मण्डनात्मक, आरोप-प्रत्यारोप प्रवृत्तियों से परे रहकर आदर्शपरक यथार्थ किंवा व्यवहार-निश्चय का सत्य, शिवं और सुन्दरम् समन्वयी द्रव्यों का प्रस्तुतिकरण पत्रकार/सम्पादक का विशेष उत्तरदायित्व है।

●

जैन पत्रकारिता की प्रासंगिकता और हम

■ हुकमचन्द जैन 'मेघ', दिल्ली

जैन पत्रकारिता का वक्त के इतने मुकाम तय करने के बाद अतीत की ओर पीछे मुड़कर देखें तो अहसास होता है कि वक्त की इस दौड़ में हमने बहुत कुछ खो दिया है। गुजरे अतीत के सामने पसरे वर्तमान के अंतराल को तीव्र गति से पार करने की चेष्टा में हमने पत्रकारिता कई मानकों की बहुमान्य मूल्यों की अनदेखी की है। जैन पत्रकारिता के अंग प्रत्यंगों को सजाने संवारने में जिन महत्वपूर्ण कर्तव्यों को हम लोगों ने अनदेखा किया उससे जैन पत्रकारिता के उज्ज्वल भविष्य पर ही कुठाराघात हुआ है। अच्छे संस्कारों के बीजारोपण एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना आदि का लक्ष्य लेकर प्रारंभ हुई हमारी पत्रकारिता में जो स्थान इन चीजों का कभी था वो अब हमारे दृष्टिकोण में न्यून होता जा रहा है। ऐसे में स्वयं पत्रकारों के बीच ही न तो कर्तव्य बोध है और न ही प्रशिक्षण की ललक। निजी और सामाजिक रिश्तों के इन बिखरे-बिखरे टुकड़ों को हम कहां खोजें ? कहां खोजें ? इस विवशता ने हमें भटका दिया है। लेकिन इस निराशाजनक वातावरण में भी जैन पत्रकारों का संगठन होना और उसे येन-केन-प्रकारेण चलाया जाना अपने आपमें एक साहसिक अभियान है। किन्तु मैं यह अवश्य कहना चाहूंगा कि जिसतरह सम्पूर्ण समाज में सद् व्यवहार रूपी नदियों में बहता स्नेह जल सूख रहा है, उसका प्रभाव कमोवेश हम पर भी पड़ रहा है और हम संगठन का दुर्लक्ष्य करने लगे हैं। समाज को कोई ऐसा दिशाबोध देने में भी अब तक असफल है जिसकी अपेक्षा रखकर हमारी पत्रकारिता का कारवां प्रारंभ हुआ था। एक शायर के शब्दों में कहूं

तो –

दब गया हूं शोर में मैं अपने ही।
कितना तन्हा हूं कारवां बनकर।।

लेकिन इस कारवां में तन्हा होने की निराशा को यदि हम आत्मावलोचन में लें तो न केवल हम आत्म कल्याण करेंगे, बल्कि समाज कल्याण करने में भी सहयोगी बन पाएंगे। बहुत संभव है कि मेरे विचार आपको कुछ निराशावादी लगें और शायद रचनात्मकता विहीन भी, लेकिन यह सारा दोष केवल हमारा ही नहीं हैं, बल्कि साहित्यिक क्षेत्र में शताब्दी के अंतिम दशक के परिदृश्य को ध्यान से देखें तो इतिहास के अंत की घोषणा के साथ-साथ उत्तर आधुनिकतावादी विमर्शों ने समाज और समाजवाद को ही हाशिए पर सरकाने का काम तेजी से शुरू कर दिया था। साहित्य और संस्कृति में एक सकारात्मक हस्तक्षेप की बजाए अनुभववाद के स्थान पर बाजारवाद को तरजीह दी जाने लगी थी। पाठक और लेखक के बीच पत्रकारिता में उपभोक्तावाद का पनपना इस युग की सबसे बड़ी त्रासदी है। इस प्रभाव ने साहित्य से जहां यथार्थवाद, सौद्देश्यता, जन पक्षधरता, मानवीय मूल्यों को क्षीण किया है, उसके साथ ही कला एवं अनुभव को भी पूंजी के सामने नतमस्तक कर दिया है। आज जैन पत्रकारिता के प्रकाश में प्रकाशित हो रहे पत्रों का सबसे बड़ा अभाव सामाजिक सहयोग एवं पूंजी ही है।

यथार्थवाद और अनुभववाद की जगह जिस तरह पूंजीवाद सारे संसार में हावी हुआ है, सारा मीडिया भी पूंजी और पूंजीपतियों की जेब में चला गया है। ऐसे में हम लोगों ने भी इसी देखादेखी में सेठों और संतों की संधि को लपकने का काम प्रारंभ कर दिया है। आज

जैन पत्रकारों के द्वारा प्रतिवर्ष कई करोड़ रुपए खर्च करके जो चार सौ से ज्यादा पत्र-पत्रिकाओं को निकाले जाने का परिश्रम हो रहा है, उसकी सार्थकता कितनी है यह मूल्यांकन अभी भी होना बाकी है। आखिर हम आधा तीतर, आधा बटेर बनकर क्यों अपना समय काट रहे हैं? इस पर उदार मन से विचार करने की आवश्यकता है। क्योंकि जैसा कि आध्यात्मिक क्रांति के पुरोधा स्वामी विवेकानन्द ने कहा है 'एक सच को हजार ढंग से भी कहा जाए तो वो सच ही रहता है, उसे झूठ कहने की हिम्मत किसी की नहीं होती।' लेकिन हम इतना पुरुषार्थ, इतना परिश्रम करके भी समाज का वह विश्वास क्यों हासिल नहीं कर पा रहे हैं, जिसके हम हकदार हैं। इस पर चिन्ता करना हमारा विषय है और चिन्तन करना भी हमारा ही कर्तव्य। अतः कतिपय ऐसे बिन्दु जिन्हें आप कड़वा सच कह सकते हैं, इन्हें सामने लाते हुए मैं निवेदन करूंगा कि हम सब लोग इस दिशा में सकारात्मक रूप से सोचें और सामाजिक स्वीकार्यता के हमारे हक को आगे बढ़कर प्राप्त करें। हम यह न भूलें कि जैसे जगत में मेरू पर्वत से ऊंचा और आकाश से विशाल कुछ भी नहीं है वैसे ही अहिंसा धर्म के समान कोई धर्म नहीं है। हमें इतने ऊंचे अहिंसा दर्शन का सेवक बनकर ही कार्य करना है। सुनने में यह बात थोड़ी आदर्शवादी लगती है लेकिन यही हमारा कर्तव्य है और यही हमारी जैन पत्रकारिता के द्वारा की गई समाज सेवा। आईये उन बिन्दुओं पर विचार करें जो हमें हमारा प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त कराने में सहायक हो सकते हैं।

प्रतिबद्धता एवं नियमितता अहिंसा धर्म के पालन के लिए हमारी कलम समर्पित हो इसलिए हमें अपनी प्रतिबद्धता एवं नियमितता दोनों को ही बनाए रखना आवश्यक है। हजारों-हजार

कारणों के बीच हमें सर्वप्रथम अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता, जीव मात्र के प्रति प्रतिबद्धता, करुणा, अनुकम्पा और सेवा भाव के जागरण का कार्य नियमितता से करना है। इससे चाहे हमारी कितनी ही उपेक्षा क्यों न हो, कितने ही कष्ट हमारे सामने क्यों न हों लेकिन एक आत्म संतोष हमें अवश्य होगा कि हम जो कर रहे हैं, वो सही दिशा में है। यदि हम इससे भटकेंगे तो हम सच्चे मायनों में जैन पत्रकारिता के उस उच्चतम मूल्य को भूल चुके होंगे जो कि हमारा श्रेष्ठ कर्म है, सबसे बड़ी आस्था है। अतः मेरा आप सभी से निवेदनहै कि आप व्यक्तिगत प्रशंसा या निन्दा के कार्य में ज्यादा लिप्त न होते हुए अहिंसा धर्म के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को हर परिस्थिति में शाश्वत बनाए रखें।

विजन और विचार : पत्रकारिता के जानकार लोगों से मैंने अब तक जो जाना व सुना है, उसका एक ही निष्कर्ष है कि पत्रकार को अपने स्पष्ट विजन और स्वस्थ विचारों के लिए जाना जाना आवश्यक है। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हमें मानना होगा कि हम कहीं न कहीं दिग्भ्रमित हैं। वैचारिक दिग्भ्रमिता और दृष्टि का धुंधलापन पत्रकारिता की दृष्टि से ऐसे दोष हैं जो शून्य से शुरू करके शून्य पर ही समाप्त हो जाते हैं इस शून्य को तोड़ना हम सबकी जबाबदारी है। यदि हम ऐसा कर पाने में सफल होते हैं तो हमारा जैन पत्रकार संगठन करना, हमारा समय लगाना, तन-मन-धन खर्च करना ही नहीं हमारा जैन होना सार्थक होगा। वरना भाषा के भ्रष्टीकरण के बीच जन-जागरण की जैसी आवश्यकता आज सारा संसार अनुभव कर रही है, इस बड़े काम से हम लोग वंचित रह जाएंगे या संभवतः हमें उसके लायक ही न समझा जाए। इसलिए मैं बारम्बार निवेदन करूंगा कि यदि जैन पत्रकारिता हमारे जीवन का एक सुकृत कर्म है तो हम लोग अपनी दृष्टि को किसी यशाकांक्षा,

पदाकांक्षा या चंद टुकड़ों के लिए धुंधला न करें। अपने प्रखर विचारों के द्वारा समाज को जगाने का काम करें, सच बोलें, मगर सच इतना कड़वा न हो कि वह जहर बनकर सारे वातावरण को ही जहरीला बना दे।

कलात्मकता और प्रतिभा का आश्रय : एक शायर ने कहा है–

आंख कान में आ जाते हैं, हम पहचान में आ जाते हैं।
नामों में खुशबू होती है, चेहरे ध्यान में आ जाते हैं।।

ये चेहरा ध्यान में लाने का काम साधना से होता है। सच कहूं तो यह एक साधना ही है जिसे हम कलात्मकता और प्रतिभा का आश्रय लेकर करते चलें तो हम बहुजन हिताय बहुजन सुखाय कार्य करने में सफल हो सकते हैं। पत्रकारिता तो वैसे भी कलात्मकता का ही पर्याय है। जो मनस्वी और प्रतिभावान हैं वह उतना ही अपनी प्रस्तुति को संवारने सजाने में, उसके अंग प्रत्यंग को निखारने में सफल होगा। प्रतिभा होगी तो कलात्मकता स्वयं अपनी गति से चलती जाएगी और एक वक्त ऐसा जरूर आएगा, इस खुशी की तलब हम सबको है क्योंकि पत्रकारिता एक कागजी प्रचार तो हमें दे ही देती है। लेकिन ये कागजी प्रचार सामाजिक ग्राह्यता भी बन सके, इसलिए हमें अपनी कलात्मकता और प्रतिभा को निखरते रहना जरूरी है। मान कर चलें कि इस व्यवसाय में धन्यवाद का स्थान नहीं है। यदि हम एक भी जगह चूके तो हमारे लिए आलोचनाओं के शूल सिर उठाकर खड़े हो जाएंगे । लेकिन हम कितना ही रचनात्मक काम क्यों न कर लें, असर होते–होते होता है। अतः अपनी आन्तरिक कला और कलात्मकता को अपनी भरपूर सर्जनात्मक चेतना के साथ संवारते चलें।

एक दिन तो मंजिल आएगी दोस्तो मैं आप ही के बीच का एक अदना व्यक्ति हूं, अतः कोई उपदेश देने की मुद्रा में कतई नहीं हूं। लेकिन यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जो मैंने सर्व साधारण के बीच जाकर, समाज के बीच जाकर संतों और सेठों के बीच उठ बैठकर सीखा है, वह इतना ही है कि समाज और सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था हमारा उपयोग लेना तो जानती है लेकिन एक बार नहीं हजार बार हमें अनदेखा भी कर सकती है। यदि हम इन सब बातों से थक-हारकर बैठ जाएं तो हमारी स्थिति कैसी होगी? इस बारे में एक गजल की कुछ पंक्तियां आपके सामने रख रहा हूं शायद आपको इस आलेख का अनिवार्य हिस्सा लगे कि -

मेरे बच्चे भी पड़ौसी का हुनर ले लेते
इनको रोका नहीं जाता तो असर ले लेते।
वो तो अच्छा हुआ मैंने इन्हें मौका न दिया
वरना ये लोग मेरा दस्ते हुनर ले लेते।

तुम नहीं जानते, शौहरत के तलबगारों को
ये कलम ही नहीं, हम लोगों का सर ले लेते।

कोई दीवार न गिरती, न तमाशा होता,
हम जो शब्दों में इशारों का हुनर ले लेते।
फिर ये बर्फीली हवाएं भला किस घर जातीं ?
हम भी बाजार से कुछ धूप अगर ले लेते।

दोस्तो ! यदि हम इतने चौकन्ने हैं कि बर्फीली हवाओं से बचकर बाजार में नहीं बिक रही धूप को सहेज सकें तो हमारी मंजिल हमें अवश्य मिलेगी। इसलिए आओ संगठन करें, सोचें, प्रतिभा निखारें और परस्पर सहयोग करें एक आवाज बनें। तभी हमारी आवाज सुनी जायेगी। हमें हमारी सामाजिक स्वीकृति आगे बढ़कर प्राप्त होगी।

मुझे प्रसन्नता है कि हम लोग अपनी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक परेशानियों के बीच में बार-बार साथ आते हैं और संगठन करने का जज्बा दिखाते हैं। ये जज्बा बना रहे, ये हौंसला बना रहे और हमारी ये आवाज इस तरह उभरे कि हम यह कहने के लायक रहें कि-

जो तौर है दुनियाँ का उसी तौर से बोलो।
बहरों का इलाका है जरा जोर से बोलो।।

इन्हीं शब्दों के साथ !

●

आज पत्रकारिता का व्यवसाय शोहरत से भरपूर है। यह शोहरत प्राप्त करना आसान कार्य नहीं है। इसके साथ जुड़ा है कड़ा परिश्रम और गंभीर चुनौती सफलता के लिए आवश्यक है। भाषा पर अच्छा अधिकार, अध्ययनशीलता, अपने परिवेश के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता कल्पनाशीलता और तनाव मुक्त होकर कार्य करने की क्षमता पत्रकारिता की उपाधि प्राप्त कर लेना मात्र सफलता की गारंटी नहीं है।

जैन पत्रकारिता : कतिपय विचार बिन्दु

■ सुरेश जैन 'सरल', जबलपुर

जैन पत्रकारिता का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि उसे समाज के 90 प्रतिशत लोग मात्र सेवा मानते हैं– साहित्य सेवा या धर्म सेवा। जबकि वर्तमान वैश्विक क्षेत्रफल में बसे हर देश के लोग पत्रकारिता को व्यवसाय मानते हैं, जो हर स्वतंत्र देश की दृष्टि में उचित है। वकीली, डाक्टरी, इंजीनियरी से लेकर कारपेन्टरी और टेलरिंग तक के व्यवसायों की तरह ही हमें पत्रकारिता को भी मान्य करना होगा, तभी यह पनपेगी और इसकी वित्तीय साख बनेगी। लोग इसे उस राष्ट्र सेवा से जोड़ सकते हैं जो हमारे सैनिक करते हैं कि थोड़ी सी पगार लेते हैं पर अवसर आने पर प्राण होम कर देते हैं।

पत्रकार और सम्पादक में अंतर यह है कि जब वह कलम जीवी मैदान (फील्ड) पर कार्य करता है तो वह पत्र बोला जाता है ; मगर जब वह अखबार के कार्यालय की टेबिल संभालता है तो सम्पादक कहलाता है। माने फील्ड पर जर्नलिस्ट और आफिस में एडिटर। जैन पत्रकारिता का नेटवर्क सीमित है, देश के हर शहर, गांव में उसके दक्ष सम्वाददाता नहीं हैं। जो हैं वे शौकिया हैं या काम चलाऊ हैं अतः सम्पूर्ण पत्रकारिता उन्हीं के विश्वास पर चल रही है। एक व्यक्ति ने अपने नगर में घटना देखी और टूटी–फूटी भाषा में सम्पादकजी को चिट्ठी लिख दी। सम्पादकजी ने उस पर विश्वास कर छाप दिया। बड़ी बात यह है कि कोई चिट्ठी मिथ्या सिद्ध नहीं होती, इसलिए जैन पत्रकारिता चलती रहती है। एक मायने में वर्तमान राष्ट्रीय पत्रकारिता की तुलना में जैन पत्रकारिता प्रमाण, तथ्य और आंकड़ों की कलाबाजी के व्यापार में पीछे है। अन्य पत्रकारिता उक्त तीनों तथ्यों

की जानकारी अपने नेटवर्क से प्राप्त कर ही समाचार छापती है। जैन अखबार अभी इस सदी में भी धनाभाव के कारण मात्र 'पत्रक' बन कर रह गए हैं। जबकि अन्य व्यावसायिक अखबार पत्रकारिता के नित नए आयाम रच रहे हैं। जैन पत्रकार को सदा वित्तीय संकट से जूझना पड़ता है वह अपने पत्र/पत्रिका के पत्ररंजन (गेट-अप) पर अधिक ध्यान नहीं दे पाता, जबकि अन्य लोग सजावट को प्रमुखता देते हैं। रोज उनके समक्ष वेस्ट गेट-अप की संतुष्टि अगड़ाई लेती हुई प्रतीत होती है। उनका अपना एक लेखक मंडल भी होता है, जिससे मनचाहे या तात्कालिक विषय पर लेखादि प्राप्त करने में दिक्कत नहीं होती। संकेत किया और विषय पर लेख हाजिर। वे लेखकों को धन्यवाद देकर प्रतिसाद भी देते हैं।

जैन पत्रकारिता मानद या मानसेवी सूत्रों पर चलती है। पत्रकार को वर्ष में एक-दो बार पत्र पुष्प श्रीफल और शॉल से संतोष करना पड़ता है, जबकि अन्य अखबारों के सम्पादकगण भारी वेतन या तय कमीशन प्राप्त करते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि देश की पत्रकारिता और जैन पत्रकारिता में तकनीकी अंतर या कहें विचार संप्रेषण का अंतर कुछ बडा नहीं है, यदि अंतर है तो वित्त व्यवस्था का। सामान्य पत्रकारिता केवल लाभ और लाभ के लिए होती है जिसमें अधिक से अधिक विज्ञापनों का दोहन किया जाता है, जबकि जैन पत्रकारिता नो लॉस नो गेन (न हानि न लाभ) के सूत्र पर चलकर ही संतुष्ट है क्योंकि उसे हर माह घाटे का डर लगा रहता है।

आप कह सकते हैं कि जैन पत्रकारिता प्रस्तुतिकरण में बहुत पीछे है। मैं इसे स्वीकार करता हूं। किन्तु यह सत्य भी बतला देना चाहता हूं कि वह वैचारिकता में अग्रणी है।

जैन पत्रकारों/सम्पादकों के समक्ष सबसे बड़ा शूल यह है कि देश में कभी उन्हें लेकर पत्रकार वार्ता का आयोजन नहीं किया जाता जबकि राष्ट्र स्तरीय सामाजिक समाधानों की प्राप्ति और उनके प्रचार-प्रसार के लिए यह अत्यन्त जरूरी है। गिरनार मसला, शिखरजी मसला, अयोध्या मसला, भ. महावीर जन्मभूमि मसला सहित अनेक बड़े मसले राष्ट्र के समक्ष सिर उठाए खड़े हैं पर किसी जैन राष्ट्रीय नेता या संत ने राष्ट्रीय स्तर पर जैन पत्रकार वार्ता आयोजित करने का कष्ट नहीं उठाया। जबकि वे गजरथ महोत्सव या किसी राष्ट्रीय गोष्ठी के पूर्व स्थानीय पत्रकारों की पत्रकार वार्ता अवश्य करते हैं। कभी-कभी उनमें एकाध जैन पत्रकार भी देखने को मिल जाता है। हमारे देश में शताधिक जैन पत्र-पत्रिकाओं के नाम चर्चा में हैं परन्तु क्या कारण है कि किसी मसले विशेष के लिए अभी तक सभी को एक साथ एक स्थान पर नहीं बुलाया जा सका। स्वागत सम्मान पुरस्कार के लिए दस पांच पत्रकारों को कभी बुलाया है, वह पृथक् बात है। संतों के चातुर्मास के समय किसी नगर या महानगर की व्यवस्था समिति चार माह तक स्थानीय चार छह पत्रों में समिति एवं संत के सचित्र समाचार प्रकाशित कराने में 25 हजार से 1 लाख रुपया तक व्यय कर डालती है इस बीच वह जैन अखबारों की चिन्ता नहीं करती अतः जैन पत्रकारिता पीछे तो रहेगी ही, प्रभावहीन भी कही जाती रहेगी।

समय रहते हर नगर और गांव की संस्थाओं, समितियों, ट्रस्टों, पुस्तकालयों, ग्रंथालयों मंदिरों आदि के लिए पत्र-पत्रिकाएं खरीदकर जुटाने की परम्परा चलानी होगी। इसी तरह हर जैन परिवार को कम से कम एक पत्र-पत्रिकाओं का आजीवन सदस्य बनना

होगा। बड़े उद्योगपति और अन्य व्यवसायी प्रतिवर्ष कुछ राशि विज्ञापनों के माध्यम से जैन अखबारों की ओर जाने दें। जो अखबार विज्ञापन नहीं छापते उन्हें साल में एक दो बार महावीर जयन्ती और निर्वाणोत्सव के समय उपयुक्त राशि दान में भेजें ताकि जैन पत्रकारिता भी अन्यों की तरह हर बिन्दु पर प्रगति कर सके और अन्य समाज के समक्ष अपनी साख बना सके पंगु न रही आवे । जैन पत्रकारों का भी कर्तव्य है कि परिपक्व लेखक की रचना छापते समय भीरुता धारण न करें, बहादुर बनें क्योंकि रचना प्रकाशन के बाद वे नहीं लेखक उत्तरदायी होता है। वैसे भी आजकल सम्पादक सूचना छापने लगे हैं – लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इतना सबकुछ करने/लिखने के बाद भी सम्पादक किसी धारदार रचना को गुम कर मौन हो जाता है तो लेखक की तपस्या व्यर्थ चली जाती है। सम्पादक निष्पक्ष बना रहे और रचना छापने में अडिग रहे तब पत्र-पत्रिका सम्माननीय बनते हैं। मुंह देखकर नहीं चलना चाहिए।

प्रजातंत्र में सबके सुख-दुख प्रजा के समक्ष रखने वाली पत्रकारिता समाज से पुत्री की तरह लालन-पालन चाहती है। जब देश स्वतंत्र नहीं था, तब की बात अलग थी, तब पत्रकार शहीदी भावनाओं के साथ स्वेच्छा से कार्य करते थे और देश को स्वतंत्र होते देखना चाहते थे। अब वैसे बलिदान की आवश्यकता नहीं है, न ही स्वतंत्रता की। आवश्यकता है तो समाज के संस्कारों और सभ्यता की सुरक्षा की, जिसे पत्रकार से बढ़कर कौन कर सकता है।

(समन्वयवाणी, अप्रैल 2006, प्रथम पक्ष जैन पत्रकारिता विशेषांक से साभार)

वर्तमान राष्ट्रीय पत्रकारिता की तुलना में जैन पत्रकारिता प्रमाण, तथ्य और आँकड़ों की कलाबाजी के व्यापार में बहुत पीछे है। **– सुरेश 'सरल'**

जैन पत्रकारिता : भावी दिशा

■ डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर

जैन पत्रकारिता का इतिहास लगभग दो सौ वर्ष पुराना है। पत्रकारिता के क्षेत्र में अकबर इलाहाबादी का यह शेर हमेशा बोला जाता है कि –

खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।।

इसका तात्पर्य यह है कि – आततायी शक्तियों के सामने वैचारिक शक्ति ही मुकाबला कर सकती है। राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री विनोद शंकर दवे ने ठीक ही कहा है– यह तो सर्वविदित है कि जो ताकत एक कलम में है; वह एक तलवार में नहीं है। यह तीखी कलम जब चलती है तो समाज में चेतना लाती है और उसको एक निश्चित लक्ष्य की ओर ले जाने में अपनी भूमिका निभाती है, परन्तु यही कलम यदि गलत दिशा में चलने लगती है तो वह समाज को छिन्न–भिन्न कर देती है।

जब देश को आजाद कराने का प्रयत्न हुआ, तब हरिजन, केसरी जैसे पत्र प्रकाशित किए गये और उनका वैचारिक प्रभाव ऐसा पड़ा कि लोग देश को आजाद कराने के लिए प्राणपण से सन्नद्ध हो गये और यहीं से पत्रकारिता की ताकत लोगों के दिल और दिमाग में बनी; जो आज तक बनी हुई है और आगे भी बनी रहेगी। आपातकाल में भी सबने पत्रकारिता का लोहा माना है।

जैन पत्रकारिता एक अलग तरह की पत्रकारिता है; जिसके मूल में जैनधर्म, दर्शन, संस्कृति, तीर्थ तथा समाज का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण है। मैंने 'जैन– संवाद', अंक–4, अप्रैल 2015 के

सम्पादकीय में लिखा था कि जैन पत्र सम्पादकों के ऊपर बहुत बड़ा दायित्व है। उन्हें हर हाल में नैतिक बने रहना है क्योंकि वह उनकी प्रतिबद्धता है। उनका जैनत्व के प्रति समर्पण जगजाहिर है, उनका साधनात्मक लक्ष्य जैनत्व का संरक्षण, संवर्द्धन, प्रचार-प्रसार है। वे अपने लेखन/सम्पादन द्वारा जो सामग्री अपने पाठकों को परोसते हैं, वह हमारे देव- शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धा भक्ति बढ़ाती है, तीर्थों को संरक्षित करती है, जैन प्रतिभाओं को प्रकाश में लाती है, जैनधर्म, दर्शन, साहित्य, ज्ञान, मनोरंजन, संस्कृति, समाज-चेतना की दिशा में विचारों को नयी भाषा, नयी शक्ल देकर समाज में उत्साह का संचार करती है। अतः हम जन/पत्रिका सम्पादकों के प्रयास की अनदेखी नहीं कर सकते। प्रायः मानद (अवैतनिक) सेवा के साथ इतना बड़ा जोखिम भरा और श्रमसाध्य कार्य करना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। समाज को अपने लिए गौरव दिलाने वाले जैन पत्र-सम्पादकों, लेखकों, पत्रकारों का यथोचित सम्मान/मार्गदर्शन/सहयोग करना चाहिए -

हम कलम के हैं सिपाही, जैनधर्म की कहते हैं। हम नहीं मसीहा हैं, जो होता है सो लिखते हैं।।

प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. अर्जुन तिवारी ने वर्तमान दौर की पत्रकारिता के विषय में लिखा है कि -

नेयं आध्यात्मिकी चर्चा, भौतिकी आर्थिकी न वा।
न वा स्वस्थ विधातृयं, छल छद्म विधायिनी।।
एवं बहूनां पात्राणां, पत्रकार महोदयाः,
पाठकानां प्रकुर्वन्ति, शोषणं चित्तदूषणम्।।

पत्रकार अब 'युग-चरण' न बनकर 'युग-चारण' बन रहे हैं और वे 'युग-चर्वण' कर रहे हैं। अब पीत, शीत, मीत, नवनीत और क्रीत पत्रकारिता का प्रचलन बढ़ रहा है। आज की पत्रकारिता में 'ज्वाला' नहीं अपितु जहर है। उसकी धार मोटी होती जा रही है, जिजीविषा का अभाव उसमें परिलक्षित हो रहा है। कुछ समाचार-पत्र अब कागजी शेर नजर आते हैं और उसके सम्पादक चीखने वाले मानसिक रोगी।

सन् 1908 में महात्मा गांधी ने पत्रकारिता के तीन उद्देश्य बताये थे। उनके अनुसार - समाचार-पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है। तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना।

वर्तमान में जैन पत्रकारिता के प्रकाशन की अनेक व्यवस्थाएँ हैं -

1. संस्थान विशेष की पत्र-पत्रिकाएँ जैसे जैनगजट, जैनमित्र, स्वतंत्र चिन्तन, सन्मति वाणी, जैन सन्देश, जैन प्रचारक, वीतराग-विज्ञान, जैनपथ प्रदर्शक, महासमिति पत्रिका, वीर, ऋषभदेशना, परिणय प्रतीक आदि।

2. साधु-सन्तों की प्रेरणा एवं उनके निर्देशन में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ। जैसे - अंकलीकर वाणी, सम्यग्ज्ञान, भावविज्ञान, विराग वाणी, सराक सोपान, पुलक वाणी, अहिंसा महाकुंभ, विशद ज्ञान ज्योति ।

3. वैयक्तिक पत्र-पत्रिकाएँ - समन्वयवाणी, पार्श्वज्योति, धर्ममंगल, महावीर टाइम्स, जिनेन्दु, धर्म रत्नाकर, सम्मेदाचल,

देवपुरी वंदना, संस्कार, मानतुंग पुष्प, चहकती चेतना, अहिंसा-करुणा, अजमेर आजकल, शुचि, अजमेर टुडे, जय कल्याणश्री, पिंक सिटी सोशल न्यूज आदि।

4. वैयक्तिक प्रभावशाली संस्थाओं से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ जैसे वीतराग वाणी, दिशाबोध, पागदभाषा, संस्कार सागर आदि।

5. जाति-उपजाति पत्रिकाएँ - हूमड़ सन्देश, गोलापूर्व जैन, हूमड़ संस्कार, जैसवाल जैनदर्पण।

6. शोध पत्रिकाएँ - अनेकान्त, प्राकृत विद्या, अर्हत्वचन, ज्ञानसोपान आदि।

7. दैनिक राष्ट्रीय पत्र दैनिक विश्वपरिवार (झाँसी, रायपुर), दैनिक जनप्रिय (ललितपुर), जिनेन्दु (अहमदाबाद)।

वर्तमान स्थिति -

1. प्रायः अधिकांश बड़े एवं चर्चित साधु अपनी पत्रिकाएँ प्रकाशित करना चाहते हैं, उनके लिए धन संग्रह करते, करवाते हैं, सदस्य बनाते हैं, उनके लिए लेखन आदि करते हैं। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं में उन्हीं साधुओं के लेख, प्रवचन, फोटो, प्रशंसात्मक लेख, उनकी देखरेख में चल रहे तीर्थ निर्माण, कार्यों की प्रेरक अपील आदि प्रकाशित होते हैं। जनाकांक्षाओं के प्रति उनका कोई रुझान नहीं होता।

2. वैयक्तिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रायः आर्थिक संकट से जूझती रहती हैं, फिर भी इनके प्रकाशकों, सम्पादकों को धर्म की तरह निर्वाह करते हैं। उनका मानना है कि -

जिंदगी की तपिश को, मुस्कुरा के झेलिये साहब।
धूप चाहे कितनी भी हो, समंदर नहीं सूखा करते।।

इन पत्रकारों की परेशानी यह है कि समाज के प्रभावित वर्ग और कभी- कभी अपने साथी स्वार्थी पत्रकारों के कोप का भाजन भी बनना पड़ता है।

3. जैन पत्रकारिता वैचारिक प्रतिस्पर्द्धा कम है, वैयक्तिता से अधिक आक्रान्त है। तात्कालिक लाभ के लिए लोग सही विचारों को लिखने वाले पत्रकारों के विरोध में खड़े हो जाते हैं। हमें दृष्टि के साथ दृष्टिकोण की विभिन्नता चाहिए, किन्तु लक्ष्य दुर्लक्ष्य नहीं होना चाहिए। विचार और उसके प्रतिपादन की शैली भले ही अलग हो क्योंकि-

सबके दिलों का अहसास अलग होता है।
इस दुनियां में सबका व्यवहार अलग होता है।
आँखें तो सबकी एक जैसी ही होती हैं,
पर सबका देखने का अंदाज अलग होता है।।

4. कुछ जैन पत्रकार उपदेशक या आक्रामक की भूमिका में हैं। जबकि उन्हें प्रेरक की भूमिका में होना चाहिए। वे मार्गदर्शक की भूमिका निभायें। नसीहत नर्म लहजे में ही अच्छी लगती है क्योंकि दस्तक का मकसद दरवाजा खुलवाना होता है, दरवाजा तोड़ना नहीं।

5. धर्म का काम जोड़ना है, तोड़ना नहीं। जैन पत्रकारिता का भी यही धर्म होना चाहिए। एक पत्रकार अपने जीवन में पीछे देखे तो अनुभव मिलेगा, आगे देखे तो उम्मीद मिलेगी और अपने भीतर देखे तो आत्मविश्वास मिलेगा।

6. आजकल पत्रकारिता का बहुत दुरुपयोग किया जाता है। अधिकांश जैन पत्रकार आगम, अध्यात्म और धार्मिक एवं सांसारिक यथार्थ को जानते हुए भी जानबूझकर झूठी एवं अधूरी

खबरें देते हैं। सच्ची जानकारी को गलत दृष्टिकोण से शाब्दिक मायाजाल में बांधकर प्रस्तुत करते हैं ताकि सच्चाई दब जाए और जो ये कहें या जो उनसे कहलाया जा रहा है, उसे सत्य मान लें।

7. सम्पूर्ण भारतवर्ष में पूजन की दो पद्धतियाँ चल रही हैं, इन्हें तेरापंथ, बीसपंथ के नाम से भी लोग जानते हैं। कोई यथार्थ तक जाना नहीं चाहता और बदलना भी नहीं। फिर भी बदलाव के लिए हमारे कुछ पत्रकार साथी निरंतर प्रयासरत रहते हैं। भविष्य में विरोध के स्थान पर सौहार्द की प्रवृत्ति अपनाने की आवश्यकता है।

8. जैन पत्रकारिता अधिकांशतः विज्ञापन से रहित एवं धन के मोह से रहित है। भविष्य में इससे जैन पत्रकारिता को बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो रहा है। समाज श्रेष्ठियों एवं उद्योगपतियों को इस पर ध्यान देना चाहिए।

(जैन सवांद, जुलाई-2018 से साभार)

●

पत्रकार का सबसे बड़ा दायित्व है तटस्थ और समभाव। उसे कभी भी पक्ष-विपक्ष का मोहरा नहीं बनना चाहिए। किसी से व्यक्तिगत वैमनस्य हेतु किसी की बदनामी नहीं करनी चाहिए। पत्रकार से समाज को बड़ी अपेक्षायें होती हैं। उसकी व्यक्तिगत मान्यतायें, व्यक्तिगत साम्प्रदायिकता, व्यक्ति के प्रति आस्था ये सब गौण होने चाहिए। वह समाज के कचरे को इकट्ठा करे पर उसे रिफाइन्ड करके समाजोपयोगी बनाकर वापिस दे।

जैन पत्रकारिता स्थिति समस्या और संभावना

■ डॉ. नरेन्द्र भानावत, जयपुर

जनसंचार माध्यमों से आज पत्र-पत्रिकाओं का व्यापक महत्व और प्रभाव है। आज पत्रकारिता ने व्यवसाय और उद्योग का रूप धारण कर लिया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योग प्रतिष्ठान हैं। ऐसी स्थिति में जैन पत्रकारिता पर जब हम विचार करते हैं तो उसका महत्व नगण्य सा प्रतीत होता है पर व्यवसाय से परे हटकर जब विचार सामग्री और सांस्कृतिक मूल्यवत्ता के संबंध में सोचते हैं तो जैन पत्रकारिता अपनी अलग पहचान रखती प्रतीत होती है। शताधिक वर्षों से अधिक समय तक जैन पत्रकारिता अपने अल्प साधनों और सीमित क्षेत्र में भी मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है।

जैन पत्रकारिता का आरम्भ मिशन भावना से हुआ। उसका प्रमुख उद्देश्य रहा जैन तत्त्व दर्शन का विवेचन, विश्लेषण, सम्यक् जीवन दृष्टि का विकास, जैन संत सतियों के विचारों, पदयात्राओं, विहार चर्याओं, धार्मिक प्रेरणाओं तथा सद्गृहस्थों की धार्मिक क्रियाओं आदि का विवरण प्रकाशन । ज्यों-ज्यों समय बीतता गया त्यों-त्यों इन उद्देश्यों में व्यापकता आती गई और जैन समाज की विविध समस्याओं का अंकन भी यथाप्रसंग जैन पत्र-पत्रिकाओं में होने लगा। आज सामान्य पत्रकारिता में सांस्कृतिक सामग्री की अपेक्षा राजनीतिक घटना चक्रों की गरमाहट, सामयिक जीवन की विसंगतियों और आपराधिक प्रवृत्तियों के समाचारों की प्रधानता रहती है। उनका उद्देश्य सस्ता मनोरंजन प्रदान करना भी होता है। पर अधिकांशतः जैन पत्र-पत्रिकायें इन घटना चक्रों से संपृक्त न रहकर केवल तात्विक सामग्री प्रस्तुत करती हैं। यह स्थिति इन पत्र-पत्रिकाओं की शक्ति भी है और सीमा भी है।

देश में जैन धर्मावलम्बियों की जनसंख्या के अनुपात में जैन पत्र-पत्रिकाओं का बड़ी संख्या में प्रकाशन, उनकी धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक निष्ठा और जागृत चेतना का प्रतीक है। देश में लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में प्रत्येक क्षेत्र से जैन पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक सभी तरह की पत्रिकायें लगभग 250 की संख्या में प्रकाशित होती हैं। यदि प्रतिमाह औसतन 50 पृष्ठ एक पत्रिका के मान लिए जायें तो प्रतिमाह 12500 पृष्ठ छपते हैं। विचारणीय विषय यह है कि इन पृष्ठों की विषय सामग्री और प्रस्तुतिकरण का व्यक्ति और समाज पर कितना और कैसा प्रभाव पड़ता है तथा कितने लोगों तक यह सामग्री पहुंचती है।

सामान्यतः देखने में आया है कि गिनती के कुछ पत्रों को छोड़कर अधिकांश पत्रों की सम्पादन एवं प्रबंध की स्थिति संतोषजनक नहीं है। न तो पत्रों के निश्चित कार्यालय हैं और न निजी प्रेस है, न सामग्री को सम्पादित एवं संशोधित करने वाले व्यक्ति हैं, न अनुभवी चिन्तनशील प्रबुद्ध लेखक हैं न पर्याप्त ग्राहक संख्या है और न सम्पादन दृष्टि है। सम्पादन संस्कार और साज सज्जा की तो बात ही दूर। इस स्थिति के कई कारण हैं। जो पत्र सक्रिय संस्थाओं अथवा साम्प्रदायिक संघों आदि से संबंधित हैं वे साधन सम्पन्न होने पर भी व्यापक दृष्टिकोण और उदार नीति की कमी के कारण बृहत् समाज को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाते हैं। कभी-कभी तो ये प्रेम और सौहार्द बढाने के स्थान पर तनाव भी पैदा कर देते हैं। ऐसे पत्रों से एक विशेष प्रकार के साम्प्रदायिक पाठकों का वर्ग बन जाता है। संत महात्माओं की प्रेरणा से आरंभ किये जाने वाले पत्रों की स्थिति भी बहुत अधिक संतोषजनक नहीं कही जा सकती। जब तक उनका

प्रेरणा बल बराबर बना रहता है और वे उसके संपृक्त रहते हैं तब तक तो पत्र की स्थिति ठीक बनी रहती है, पर ज्योंही उनका संपर्क कम होता है तो वह पत्र नियमित भी नहीं रह पाता। व्यक्तिगत पत्रों में अर्थ की कठिनाई बराबर बनी रहती है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि जैन पत्रकारिता का धरातल अब भी मुख्यतया धार्मिक बना हुआ है। उसे विस्तृत सांस्कृतिक सन्दर्भों से जोड़ने की बड़ी आवश्यकता है। जिसप्रकार जैनधर्म अपने में विराट मानव मूल्यों को समाहित करके भी संकीर्ण घेरे में बंदी है, उसी प्रकार जैन पत्र भी अपनी विचार सामग्री में मानव मूल्यवाही जीवन निर्माणकारी सामग्री संजोकर भी सामान्यतः जैन पाठकों तक ही कहना चाहिये सम्प्रदाय विशेष तक ही अलग-अलग वर्गों में सीमित है। अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या 2 हजार से कम है। इने गिने ही पत्र ऐसे हैं जो 5 हजार से अधिक छपते हैं। जैन पाठकों के अतिरिक्त अन्य लोगों तक इन पत्रिकाओं की पहुंच बहुत कम है। जैन पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक बनाने की आवश्यकता है। इसके लिये जिला पुस्तकालयों, सूचना केन्द्रों, प्रमुख शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों, विशिष्ट विद्वानों, प्रबुद्ध विचारकों आध्यात्मिक केन्द्रों को निःशुल्क अथवा रियायती मूल्य पर इन्हें पहुंचाने की व्यवस्था की जानी चाहिये।

जैन पत्रकारिता के दो मुख्य पक्ष हैं - वैचारिकता और समाचार-प्रेषणीयता । वैचारिकता में जैन पत्रकारिता मुख्यतः धर्म दर्शन और तत्त्व विश्लेषण तक ही सीमित है। जैन वांगमय अपनी प्राचीनता और विविधता में अप्रतिम हैं। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक सन्दर्भों में भी वह भरा पड़ा है। भारतीय संस्कृति और उसके माध्यम से मानव संस्कृति के अध्ययन

अध्यापन एवं अनुसंधान में जैन वांगमय का उपयोग अपरिहार्य है। यह उपयोग जैन पत्रकारिता के माध्यम से सहज सम्पन्न कराया जा सकता है अतः यह आवश्यक है कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जैन साहित्य, इतिहास, पुराण, भूगोल, ज्योतिष, गणित, अध्यात्म, संगीत, स्थापत्यकला, पुरातत्व जैसे विविध स्तम्भ संयोजित किये जायें और उनमें जैन स्रोतों से प्राप्त सामग्री का प्रकाशन किया जाये। इस दिशा में भी प्रयत्न हो कि जैन साहित्य, जैन इतिहास और पुरातत्व जैन विज्ञान, जैन कला से संबंधित विशिष्ट पत्रिकायें प्रकाशित हों।

जैन पत्रकारिता में समाचारों का भी अपना विशेष महत्व है। समाचार समाज की सम सामयिक गतिविधियों और प्रवृतियों के दिग्दर्शक होते हैं। इन्हीं समाचारों का उपयोग कर धार्मिक और सामाजिक इतिहास का निर्माण किया जाता है। उनके प्रकाशन में विवेक और सावधानी की बड़ी आवश्यकता है। समाज को कमजोर बनाने वाले, एकता को आघात पहुंचाने वाले, थोथी प्रशंसा और मिथ्या प्रचार करने वाले समाचारों से न केवल पत्रिका का स्तर गिरता है वरन् उससे समाज में विघटन भी पैदा होता है। वर्तमान में कोई ऐसी एजेन्सी नहीं है न ऐसे संवाददाता है जो प्रत्येक क्षेत्र से ठीक समय पर विश्वसनीय और महत्वपूर्ण समाचार जैन पत्रिकाओं को भेज सकें। परिणामस्वरूप डाक के द्वारा जो भी समाचार आते हैं, चाहे वे किसी के माध्यम से आयें उन्हें यथा सुविधा प्रकाशित कर दिया जाता है। उनका सम्पादन, संशोधन बहुत कम होता है। जैन पत्रकारिता को विशेष प्रभावकारी व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि केन्द्रीय स्तर पर जैन समाचार भारती जैसी संस्था का संगठन किया जाये और प्रत्येक प्रांत में

संवाददाता नियुक्त हों, प्रान्तीय संवाददाता प्रत्येक जिले में सह संवाददाता नियुक्त करें। इस व्यवस्था से जैन पत्र समाज के दर्पण और दीपक बन सकेंगे।

किसी भी पत्र-पत्रिका में सम्पादकीय लेखों का अपना विशिष्ट महत्व होता है। अधिकांश जैन पत्र-पत्रिकाओं में सम्पादकीय लेख होते ही नहीं और जिनमें सम्पादकीय लेख होते हैं उनमें कुछेक को छोड़कर प्रायः सम्पादकीय संक्षिप्त व साधारण होते हैं। स्वस्थ, विचारशील, सुधारप्रिय, तटस्थ और निर्भीक समाज में घटित स्थितियों के मार्गदर्शक सम्पादकीय लेखन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना अत्यन्त आवश्यक है।

जैन पत्रकारिता व्यवसाय न होकर एक विचार है, जीवन पद्धति है। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापना में और भारतीय लोकजीवन तथा लोक धर्म के साक्षात्कार में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। जैन पत्रकारिता सादा जीवन अहिंसक दृष्टि, सेवा कार्य, वात्सल्यभाव, आध्यात्मिक स्फुरणा, नैतिक उन्नयन, शाकाहार, जीवदया, क्षमा, प्रेम, मैत्री जैसे मूल्यों के विकास के लिये समर्पित है। ये मूल्य सार्वजनिक क्षेत्रों में संप्रेषित हों इसके लिए जैन पत्रकारिता को सार्वजनिक क्षेत्र की पत्रकारिता के रूप में प्रतिष्ठित करने की संभावनाओं का पता लगाना आवश्यक है। हमारे इर्द गिर्द ऐसे निष्काम, सेवाभावी व्यक्तित्व हैं जो समाज सेवा के लिये समर्पित हैं। उनके प्रेरक जीवन प्रसंगों को और लोक कल्याणकारी सेवाभावी संस्थाओं की प्रवृत्तियों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार में बहुत बड़ा योगदान दिया जा सकता है।

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण में बच्चों, युवकों और महिलाओं की प्रभावकारी भूमिका होती है। बच्चों के संस्कार निर्माण युवकों के

रचनात्मक दृष्टिकोण और महिलाओं की शक्ति को जागृत और विकसित करने की दृष्टि से जैन पत्र-पत्रिकाओं में विशेष सामग्री दिया जाना आवश्यक है। अभी बच्चों, युवकों और महिलाओं से संबंधित एकाध पत्र-पत्रिकायें ही निकलती हैं। इनकी संख्या बढाई जानी चाहिए। ज्ञान के विकास के साथ-साथ साक्षरता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। जैन समाज को शत-प्रतिशत साक्षर कहना अत्युक्ति नहीं होगा। प्रत्येक परिवार में अध्ययन की रुचि है और जहाँ नहीं है उसे जागृत किया जा सकता है। जिन परिवारों में पारस्परिक संस्कार नहीं हैं, वे वाजारों में बिकने वाली सस्ती पुस्तकें पत्र-पत्रिकायें तो पढते हैं पर सद्विचार प्रेरक पत्र-पत्रिकाओं से उनका सम्पर्क नहीं हो पाता। अतः रोचक, बहुरंगी, सचित्र कथा प्रधान पत्रिकाओं के प्रकाशन की बड़ी संभावनायें हैं। जैन कथा साहित्य अत्यन्त समृद्ध और वैविध्यपूर्ण है। अतः सचित्र कथा प्रधान पत्रिकाओं के लिए बड़ी मांग पैदा की जा सकती है। जैन कथाओं के माध्यम से सार्वजनिक पत्र-पत्रिकाओं को समृद्ध करने का कार्य भी जैन लेखकों पत्रकारों और सम्पादकों द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिये।

जैन पत्रकारिता की साज-सज्जा और मुद्रण प्रक्रिया पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अधिकांश पत्रकारों और सम्पादकों को भी किसी विशेष प्रकार का प्रशिक्षण और अनुभव नहीं है। कई पत्रों के सम्पादक वे लोग हैं जो उन पत्रों को आर्थिक सहयोग देते हैं अथवा सम्बद्ध संस्था विशेष के मंत्री या अध्यक्ष हैं। अनुभवी पत्रकारों एवं सम्पादकों के अभाव में जैन पत्रकारिता की साज सज्जा और छपाई सफाई विशेष आकर्षक नहीं बन पाती है। सम्पादक का कार्य उद्यान के माली की तरह होता है। वह

अनावश्यक घास-फूस और झाड़ झंकाड़ को दूर कर उद्यान के सौंदर्य को द्विगुणित करता है। सम्पादन संस्कार के अभाव में अधिकांश जैन पत्र-पत्रिकायें अपना प्रभाव नहीं छोड़ पातीं। जैन पत्रों की भाषा भी सुबोध और स्पष्ट होनी चाहिए। कई बार ऐसा देखा जाता है कि लेखों की भाषा दुर्बोध, बोझिल और पारिभाषित शब्दावली से लदी होती है। भाषा को संस्कारित, सरल और सहज बनाने का दायित्व सम्पादकों को है। इसके लिये प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना करना आवश्यक प्रतीत होता है।

जैन पत्रकारिता का साहित्य संरक्षण और सृजन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अनेक पत्रकाओं के माध्यम से आगमिक, दार्शनिक और कथा साहित्य सरल और सरस बनकर पाठकों के समक्ष आया है। समय-समय पर कविता, कहानी, नाटक, संस्मरण, ललित लेख आदि के प्रकाशन द्वारा रचनात्मक साहित्य विपुल परिमाण में निर्मित हुआ है और समाज में कई नये साहित्यकार सामने आये हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से श्रेष्ठ रचनात्मक साहित्य का चयन कर विविध विधा विषयक प्रतिनिधि ग्रन्थ प्रकाशित किये जाने चाहिए।

अधिकांश जैन धर्मानुयायी उद्योगपति और व्यवसायरत हैं। देश के औद्यौगिक विकास में उनका बड़ा योगदान है। सार्वजनिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किये हैं। राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जैन पत्रकारों, सम्पादकों और लेखकों की कमी नहीं है। आवश्यकता है सबको मिल बैठकर एकजुट होकर जैन पत्रकारिता को संस्कारित और सुनियोजित करने की। इसके लिये एक केन्द्रीय नियामक मंडल गठित किया जाना चाहिये। विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होने वाले जैन पत्रिकाओं में परस्पर आदान-प्रदान करने की भावना से एक अन्तरभारती परामर्श मंडल भी बनाया जाना चाहिये ।

उपर्युक्त विवेचन में जैन पत्रकारिता की शक्ति और सीमा का संक्षिप्त निर्देशन किया गया है। इससे स्पष्ट है कि जैन पत्रकारिता की स्थिति निराशाजनक नहीं है। उसमें सतत् विकासशीलता और नित्य नवीनता का बोध है। देश में शायद ही कोई ऐसा समुदाय है जो इतने अल्पमत में होकर भी इतनी बड़ी संख्या में पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित करता हो । जैन पत्रकारिता की जहां यह शक्ति है वहां उसकी यह भी एक सीमा है कि पत्र-पत्रिकाओं की इतनी भारी भीड़ में से सर्व जनोपयोगी, सर्वसंतोषकारी, सम्प्रदाय रहित एकाध से अधिक पत्रिकाओं को पहचाना जा सके। सद्विचार प्रवर्तनकारी, मानव मूल्यों की संवाहिका स्वस्थ पत्रकारिता को प्रोत्साहन देने के लिये अखिल भारतीय स्तर पर एक जैन पत्रकारिता पुरस्कार का प्रवर्तन करना अधिक समीचीन होगा।

(समन्वयवाणी, अप्रैल 2006, प्रथम पक्ष जैन पत्रकारिता विशेषांक से साभार)

●

'संवाद' कहते हैं ऐसी बातचीत को, जो हमारा या धर्म और समाज की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करे, उलझनों को सुलझाये तथा निर्णय-रूप हो। संवाद हमेशा ही सकारात्मक होता है। वह रूठे हुओं को मनाता है, समाज में सद्भाव उत्पन्न करता है और अपयश के दाग-धब्बों को मिटाता है। समर्थ रामदास ने ठीक ही कहा है - 'तुटे वाद, संवाद तर्थे करावा' अर्थात् जहाँ विवाद को मिटाकर संवाद उत्पन्न हो, ऐसी ही चर्चा करनी चाहिए। 'संवाद' ही सर्वथा उचित है' इस तथ्य या कथ्य में सन्देह के लिए कोई अवकाश ही नहीं है।

-प्रा. नरेन्द्र प्रकाश जैन

जैन पत्रकारिता का सिंहावलोकन

■ डॉ. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार'

पत्रकारिता के क्षेत्र में इलेक्ट्रानिक मीडिया के आ जाने के बाद भी सम्प्रति समाचार पत्रों का यथावत् महत्व बरकरार है। क्योंकि विचार सम्प्रेषण का सशक्त और स्थायी माध्यम आज भी समाचार पत्र ही है। इनके माध्यम से नित नए वैज्ञानिक आविष्कारों, खोजों, धार्मिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक स्थितियों, सामाजिक परिवर्तनों या विकास ह्रास की सूचनाओं का विवरण प्राप्त होता है। राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक उत्थान पतन की स्थिति में भी समाचार पत्र कारक का कार्य करते हैं इसलिए मानव समाज में इनका महत्वपूर्ण स्थान आज भी बना हुआ है।

विश्व के इतिहास में पत्रकारिता के बीज अत्यन्त प्राचीन हैं। पहले समाचार प्रेषण का माध्यम पशु-पक्षी तथा मनुष्य हुआ करते थे उसके बाद अखबार नवीस का जन्म हुआ, तदुपरान्त उक्त नवीस की ही प्रतिलिपियां बेची जाने लगी। सर्वप्रथम छापाखाने का जन्म ग्यारहवीं सदी में चीन में हुआ जिसका प्रमुख उद्देश्य धर्म प्रचार था। उसी छापाखाने से पहला समाचार पत्र भी छपा, उसके बाद हालैंड ने 1526 ई. में, जर्मनी ने 1610 ई. में, इंग्लैण्ड ने 1622 ई. में, अमेरिका ने 1660 ई. में, रूस ने 1703 में, फ्रांस ने 1737 ई. में तथा भारत में 1780 ई. में कोलकाता से समाचार पत्र का सर्वप्रथम प्रकाशन हुआ। हिन्दी भाषा का पहला समाचार पत्र 1817 ई. में विलियम केरी नामक पादरी ने छापा था। जैन सम्प्रदाय का पहला समाचार पत्र 'जैन दिवाकर' गुजराती मासिक अहमदाबाद से 'जैन पत्रिका' नामक मासिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। पंडित जियालाल ज्योतिषी ने 1884 ई. में जियालाल प्रकाश उर्दू

साप्ताहिक को जन्म दिया था। उन्होंने एक जैन साप्ताहिक का भी प्रकाशन किया था। बाद में जैनों के सभी सम्प्रदायों, संस्थाओं और प्रमुख व्यक्तियों के साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि पत्र हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, आदि भाषाओं में प्रकाशित होने लगे। सभी का उद्देश्य धर्म प्रचार और समाज को जागरूक बनाना रहा। अभी तक जैन समाज में लगभग 600 पत्र-पत्रिकाओं का जन्म हो चुका है. जिनमें से अधिकांश काल कवलित हो गई फिर भी अनुमानतः 300 पत्र-पत्रिकाएं अभी भी छप रहीं है। अत्यन्त अल्पसंख्यक जैन समाज द्वारा इतनी अधिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके योगदान और जागरुकता को रेखांकित करता है। कुछ पत्र पत्रिकाओं का परिचय यहां दिया जा रहा है -

जैन सिद्धान्त भास्कर/जैना एण्टीक्वेरी

श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान एवं श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा (बिहार) का इतिहास तथा पुरातत्व संबंधी हिन्दी अंग्रेजी का द्विभाषी पत्र है। जैन सिद्धान्त भवन, आरा, उत्तर भारत विशेषतः बिहार का एक मात्र जैन पाण्डुलिपियों का संग्रह केन्द्र है। भवन की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सामग्री के प्रचार-प्रसार के निमित्त श्री पद्मराज रानीवाला के सम्पादन में जैन सिद्धान्त भास्कर/जैना एण्टीक्वैरी का सर्वप्रथम प्रकाशन 1612 ई में प्रारंभ हुआ। प्रांरभ में यह पत्र संयुक्त रूप में त्रैमासिक प्रकाशित होते रहे. किन्तु दुर्भाग्य से एक वर्ष बाद इसका प्रकाशन बंद हो गया।

डॉ. हीरालाल जैन, डॉ. ए.एन. उपाध्ये, बाबू कामताप्रसाद जैन और पंडित के. भुजबली जैसे मनीधि विद्वानों के सम्पादकत्व में इसका सन् 1635 में पुनः प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इक्कीस वर्षों के

सेवाकाल के बाद 1656 से 1662 तक पुनः इसका प्रकाशन बंद हो गया। 1663 से पुनः इसका नियमित प्रकाशन शुरू हुआ। अब इसके साथ डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य जैसे विद्वान सम्पादक के रूप में जुड़े बाबू सुबोध कुमार जैन ने अपनी सशक्त प्रबंधन क्षमता से इसका उत्तरदायित्व संभाला। श्री जैन निरन्तर स्वाध्याय करते रहे तथा लिखते रहे। उनके साथ 1682 से मुझे भी कार्य करने का अवसर मिला है। वे सोते जागते भास्कर की चिन्ता किया करते थे। डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल भी इसके सम्पादक रहे हैं। सम्प्रति डॉ. राजाराम जैन, डॉ. गोकुलचन्द्र जैन, डॉ. लालचन्द जैन, डॉ ऋषभचन्द्र जैन फौजदार आदि विद्वान इसके सम्पादन का कार्य करते रहे हैं। सभी का सम्पादकीय तथा लेखकीय सहयोग भास्कर को प्राप्त होता रहा है।

यह भाग 1-6 तक त्रैमासिक रहा तथा भाग 7 से षट्मासिक हो गया। बीच-बीच में विशेष प्रसंग पर संयुक्तांक भी निकलते रहे हैं। इसके पुराने अंकों को देखने से ज्ञात होता है कि जैन इतिहास और पुरातत्व के क्षेत्र में शोध खोज के लिए इस शोध पत्र ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। प्राचीन आचार्यों के इतिवृत्त तथा उनकी रचनाओं के परिचय भास्कर ने निरन्तर प्रकाशित किए हैं, जो अनुसंधाता विद्वानों के लिए विशेष मार्गदर्शक सिद्ध हुए हैं।

सम्प्रति इसका प्रकाशन पुनः बाधित हो गया है। बाबू सुबोधकुमार जैन ने भवन और भास्कर संबंधी सभी कार्य अपने सुयोग्य पुत्र श्री अजयकुमार जैन तथा प्रपोत्र श्री प्रशान्त जैन एवं पराग जैन को सौंप दिया है, किन्तु इनका ध्यान शोध पत्रिका के प्रकाशन की ओर नहीं है। अतः उक्त महत्वपूर्ण कार्य की ओर उनका ध्यान केन्द्रित हो, ऐसी अपेक्षा है।

अनेकान्त

यह वीर सेवा मंदिर, सरसावा, सम्प्रति नई दिल्ली का हिन्दी त्रैमासिक शोध पत्र है। इसका प्रकाशन 1630 ई. में प्रारंभ हुआ था। इसके सस्थापक सम्पादक आचार्य जुगलकिशोर मुख्तार थे, जिन्होंने इतिहास और संस्कृति संबंधी शोध-खोज के निमित्त अनेकान्त को जन्म दिया था। जिसके माध्यम से बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान सम्पादक ने आचार्य समन्तभद्र के कालजयी इतिवृत्त को खोज खोजकर समाज के सामने रखा। पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार ने दार्शनिक जगत में आचार्य समन्तभद्र के योगदान का आजीवन प्रचार-प्रसार किया।

मुख्तार साहब अद्वितीय विद्वत्ता सम्पन्न शोधी खोजी विद्वान तथा उत्कृष्ट समालोचक थे। अनेकान्त के प्रत्येक लेख का सम्पादन सावधानी पूर्वक किया करते थे। सम्पादन संबधी उनके कतिपय निर्धारित मानक थे, जिनमें भाषा शोधन, विराम प्रयोग, शब्द परिवर्तन पुनरुक्त याक्य निरसव विभक्ति प्रयोग आदि प्रमुख थे। वे हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त विद्वान आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के समसामयिक पत्रकार एवं साहित्य गवेषी सम्पादक थे। जैन इतिहास संस्कति और साहित्य के संरक्षण, संवर्द्धन तथा शोध के क्षेत्र में उनके अनुकरणीय योगदान को अनेकान्त के तत्कालीन अको में देखा जा सकता है।

ई. सन् 1656 से 1662 तक संस्थागत एवं प्रबंध संबंधी कारणों से इसका प्रकाशन स्थगित रहा। डॉ गोकुलप्रसाद जैन की देखरेख तथा पं. पदमचन्द शास्त्री के सम्पादकत्व में पुनः 1663 से इसका छपना प्रारंभ हो गया। सम्प्रति इसका सम्पादन डॉ जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर बड़ी कुशलता के साथ कर रहे हैं। डॉ. साहब ने इसके स्वरूप को आकर्षक बनाते हुए कलेवर को भी बढ़ाया है।

जैन हितैषी

पं. पन्नालाल बाकलीवाल ने 'देश हितैषी नाम से 1863 ई. में एक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया

जिसका नाम संस्थापक सम्पादक बाकलीवाल ने ही सन् 1604 में 'हितैषी' कर दिया। पत्र का प्रमुख उद्देश्य जैन संस्कृति एवं जैन इतिहास विषयक शोध खोज को प्रकाशित करना था। इसे जैन जगत का आद्य शोध मासिक होने का गौरव प्राप्त है। इस पत्र ने देश के विभिन्न भागों में उपलब्ध जैन धर्म, दर्शन और साहित्य से सम्बद्ध प्राचीन अप्रकाशित प्रकाशित कर साहित्यिक शोध खोज को गतिशील बनाया। बाकलीवाल जी जैन समाज एवं संस्कृति के प्रमुख संरक्षण तथा जैन पत्रकारिता के गुरुणां गुरु थे।

पं. बाकलीवाल के बाद पं. नाथूराम प्रेमी को जैन हितैषी का सम्पादन एवं का उत्तराधिकार प्राप्त हुआ । प्रेमीजी बडे निर्भीक एवं स्वाभिमानी पत्रकार में कभी किसी अन्य व्यक्ति का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं किया। जैन हितैषी अपने युग का साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक गतिविधियों का प्रमुख संवाहक रहा है। पं. जुगलकिशोर मुख्तार युगवीर भी कुछ समय तक इसके सम्पादक रहे हैं। इसमें शोध खोजपूर्ण तथा उच्चकोटि के लेख एवं कविताएं छपती थी। इस पत्र ने न केवल अप्रकाशित साहित्य और साहित्यकारों को प्रकाश में लाने का कार्य किया, अपितु अनेक नए साहित्यकारों को भी साहित्य सेवा के लिए प्रोत्साहित किया। बाद में सामाजिक चेतना का अग्रदूत यह पत्र अस्त हो गया। किन्तु जैन जगत इसकी सेवाओं एवं प्रेरणाओं को कभी भुला नहीं सकेगा।

शोधादर्श

इतिहास के जैन मनीषि, विद्या वारिधी स्व. डॉ. ज्योतिप्रसाद

जैन की प्रेरणा एवं सहयोग से तीर्थंकर महावीर स्मृति केन्द्र समिति, लखनऊ ने 1685 में शोधादर्श नाम से शोध पत्रिका निकालने का निर्णय लिया था। तदनुसार शोधादर्श का पहला अंक डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन के सम्पादकत्व में 6 फरवरी 1686 को प्रकाशित हुआ। यह शोध पत्रिका चातुर्मासिक है। स्व. डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन के सम्पादन में केवल 6 ही अंक प्रकाशित हो सके उसके बाद उनके भाई श्री अजितप्रसाद जी जैन एवं डॉ. शशिकान्त जैन श्री रमाकान्त जैन के सम्पादकीय तथा लेखकीय सहयोग के साथ शोध पत्रिका ने नित नई सामग्री शोधार्थियों के लिए उपलब्ध कराई। पत्रिका ने समाचार विमर्श के अन्तर्गत निरन्तर समाज और विद्वानों को अपने अस्तित्व का अहसास कराया। स्व. ज्योतिप्रसादजी के परिवारजनों ने इस पत्रिका को अपने तन मन धन से संजोकर निखारा है। डॉ. शशिकान्त जैन और उनके भाई रमाकान्त जैन जब तक रहे शोधादर्श का प्रकाशन अनवरत जारी रहा। उसके पश्चात् सह सम्पादक के रूप में नलिन जैन ने भी कुछ समय तक इसका प्रकाशन किया। परन्तु अब यह पत्र बंद हो गया है।

प्राकृत विद्या

परमपूज्य राष्ट्रसंत सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज के उदयपुर विहार तथा आचार्य कुन्दकुन्द द्विसहस्राब्दि वर्ष 1688-86 में प्राकृत अध्ययन प्रसार केन्द्र की स्थापना उदयपुर में की गई थी। उसी केन्द्र की शोध पत्रिका के रूप में प्राकृत विद्या का पहला अंक जुलाई 1688 में प्रकाश में आया। स्थापना काल में इसके मानद सम्पादक डॉ. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर तथा प्रबंध सम्पादक श्री महावीर मिन्डा उदयपुर थे। इसके परामर्शक मण्डल में

डॉ. विलास ए. संगवे, डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री, डॉ. दयानन्द भार्गव, डॉ. राजाराम जैन, पं. बलभद्र जैन थे। बाद में इसके प्रकाशन का दायित्व कुन्दकुन्द भारती शोध संस्थान, नई दिल्ली के हाथ आया। तब इसके सम्पादक मण्डल में डॉ. उदयचन्द जैन पं. जयकुमार उपाध्ये, डॉ. सुदीपकुमार जैन, पं. महावीर शास्त्री के नाम जुड़े। अनन्तर डॉ. शशिप्रभा जैन, डॉ. वीरसागर जैन, डॉ. अनेकान्त जैन, श्री पारसदास जैन तथा डॉ सत्यप्रकाश जैन इसके सम्पादन प्रकाशन से जुड़े। उपर्युक्त सभी विद्वानों के सहयोग से प्राकृत विद्या अपने 37वर्ष पूर्ण कर 38 वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। प्राकृत और जैन विधाओं के उच्चतर अध्ययन और अनुसंधान में इस शोध पत्रिका ने उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए विद्वत जगत में श्रेष्ठ स्थान बना लिया है। इस पत्रिका ने पूरी के ऐतिहासिक महत्व एवं वैशिष्ट्य को श्रमण : रेखांकित किया है। पत्रिका का प्रत्येक अंक नवीन सामग्री और नई दृष्टि के साथ प्रकट होता है। वर्तमान में डॉ. वीरसागरजी के संपादकत्व में पत्रिका निरन्तर प्रकाशित है।

तुलसी प्रज्ञा

यह जैन विश्व भारती (मानित विश्वविद्यालय) लाडनूं का प्रमुख का प्रमुख शोधपत्र है। तुलसी प्रज्ञा त्रैमासिक का प्रकाशन 1675 में डॉ. महावीर राज गेलडा के सम्पादकत्व में प्रारंभ उक्त पत्रिका ने अपना अच्छा प्रभाव बनाया है। पत्रिका हिन्दी, अंग्रेजी द्विभाषिक है। इसमें निरन्तर शोध लेख ही छपते हैं। इसके सम्पादकों में डॉ. नथमल टाटिया, डॉ. कमलेशकुमार जैन आदि विद्वान रहे हैं। सम्प्रति जैन विश्व भारती संस्थान को मानित विश्व विद्यालय का दर्जा प्राप्त हो गया है। यहां पांच विषयों में स्नातकोत्तर तथा जैन परम्परा की विभिन्न विधाओं में शोध कार्य कराया जाता है। जैनागमों के मानक संस्करण भी संस्थान ने प्रकाशित किए हैं। उक्त संस्थान जैन विधाओं के संरक्षण एवं विकास हेतु सतत् प्रयत्नशील है। शोध पत्रिका का भी जैन सिद्धान्तों के संरक्षण और विकास में सराहनीय योगदान है।

तीर्थकर

हीरा भैया प्रकाशन, इन्दौर से तीर्थंकर का प्रकाशन 1671 में प्रारंभहुआ था। हिन्दी भाषा के प्रख्यात विद्वान एवं पत्रकार डॉ. नेमीचन्द जैन इसके संस्थापक सम्पादक थे। यह विचारपूर्ण हिन्दी मासिक पत्र है। तीर्थकर ने ओजपूर्ण भाषा में विचारोत्तेजक सामग्री प्रकाशित करके शीघ्र ही समाज में अपना स्थान बनाया था। इसके अनेक विशेषांक स्मरणीय हैं। उनमें जैन पत्रकारिता विशेषांक उल्लेखनीय है। सम्प्रति डॉ. नेमीचन्द जैन हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी स्मृतियां आज भी मन मस्तिष्क में मौजूद है। बाद में डॉ. जैन ने शाकाहार क्रांति आदि पत्र भी निकाले थे. जिन्हें समाज ने पूरा आदर दिया था। इधर काफी समय से तीर्थकर के अंकों को देखने का अवसर नहीं मिला है। अतः अधिक लिख पाना संभव नहीं है।

श्रमण

पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी से इसका प्रकाशन 1646 में हिन्दी मासिक के रूप में प्रारंभ हुआ था। इसके पहले सम्पादक डॉ. मोहनलाल मेहता थे, जो पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के निदेशक भी थे। बाद में इसका अशोककुमार सिंह, डॉ. शिवप्रसाद, डॉ भागचन्द्र जैन 'भास्कर', डॉ. प्रकाश पाण्डेय आदि विद्वानों ने 1989 तक यह पत्रिका मासिक ही रही है। 1990 से इसे त्रैमासिक शोध पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। सन् 1965 से इसमें अंग्रेजी भाषा के लेख छपने लगे। प्रो. सागरमलजी के कुशल सम्पादन में पत्रिका ने नई ऊंचाईयों को प्राप्त किया। इस पत्रिका ने पाठकों को उच्च स्तरीय विचारपूर्ण शोध सामग्री प्रदान कर जैन साहित्य और संस्कृति के गौरव को बढ़ाया है। इसका प्रत्येक अंक संग्रहणीय है।

जैन महिलादर्श

दिगम्बर जैन महिला परिषद् के प्रमुख हिन्दी मासिक के रूप में जैन महिलादर्श सर्वप्रथम 1921 में सूरत से प्रकाशित हुआ। इसकी आद्य संस्थापिका/सम्पादिका विदुषी चन्दाबाई जैन, आरा थीं। जैन पत्रकारिता के इतिहास में यह पहला पत्र था, जो नारी चेतना को मुखर करने के उद्देश्य से प्रकाश में आया। बीसवीं सदी के आरंभ में भारतीय नारी समाज में काफी उपेक्षित थी। इसे ही दृष्टि में रखते हुए ब्र. चन्दाबाई आरा के सप्रयत्नों से दिगम्बर जैन महिला परिषद् तथा जैन महिलादर्श अस्तित्व में आये। भारतीय विशेषकर जैन महिलाओं के विकास में पत्र ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर उन्हें समाज में सम्मानित स्थान पर पहुंचाया। उनके मनोबल को उन्नत करते हुए उन्हें चिन्तन मनन के क्षेत्र में प्रवृत्त किया।

परिणाम स्वरूप आज जैन महिलाएं सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करती रही हैं।

दिशाबोध

प्रबुद्ध जैन विचार मंच कोलकाता के इस विचार मासिक का प्रकाशन मंच के संयोजक डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा के सम्पादकत्व में 1997 में प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका ने स्वच्छ पत्रकारिता के आदर्श को बनाए रखने में सशक्त भूमिका निभाई है। इस पत्रिका ने बहुत कम समय में सम्पूर्ण जैन समाज को निश्चित रूप से अपनी दशा का बोध कराने में सफलता हासिल की है। मेरी शुभकामनाएं हैं कि श्री बगड़ाजी इस मिशन को निरन्तर आगे बढ़ाने में सफल रहें। इसका प्रत्येक अंक नए विचारों के साथ पाठकों के हाथ में पहुंचकर गुदगुदी पैदा करने में समर्थ है।

समन्वय वाणी

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में जब शुद्धाम्नाय विरोधी कार्यकलाप समाज में जड़ जमाने लगे तब एक नवीन पाक्षिक पत्र का उदय हुआ, जिसे समन्वय वाणी नाम दिया गया। निर्भीकता, उत्साह और सामाजिक विकृतियों को दूर करने की अक्षुण्ण लालसा ने ही इसे पत्रकारिता जगत में प्रमुख स्थान पर पहुंचाया है। इसके संस्थापक एवं आद्य सम्पादक श्री अखिल बंसल हैं, जो पूरी लगन और परिश्रम से पत्र का सम्पादन प्रकाशन करते हैं। इसके सम्पादक मण्डल में श्री बिरधीलालजी सेठी, पं. बंशीधरजी शास्त्री, पं. भंवरलालजी पोल्याका, श्री श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, रतनलालजी कटारिया, जमनालाल जैन वाराणसी तथा श्री अजितप्रसाद जैन लखनऊ जैसे सुधारवादी लोग रह चुके हैं। वर्तमान में मिलापचन्द डंडिया जयपुर, डॉ. शशिकान्त जैन लखनऊ, श्रीमती लीलावती जैन पूना, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल अमलाई, श्रीमती शैल बंसल, जयपुर हैं जो इसके सम्पादन में निरन्तर सहयोग करते रहे हैं तथा कर रहे हैं। इसके परामर्शदाताओं में श्री डॉ. राजाराम जैन आरा, डॉ. रमेश जैन निवाई, डॉ. देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री, नीमच आदि महानुभावों का नाम अग्र पंक्ति में आता है। 1981 से इसका नियमित प्रकाशन हो रहा है। इसे जैन समाज का ब्लिट्ज कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। समय के अच्छे बुरे थपेड़ों को भी इस पत्र ने सहर्ष झेला है, जिससे इसकी छवि में निरन्तर निखार आया है। सम्प्रति समन्वय वाणी अपना रजत जयन्ती वर्ष मना चुकी है और 45वें वर्ष में प्रकाशन जारी है। मेरी इस पत्रिका के लिए मंगल कामनाएं हैं।

पार्श्व ज्योति

हिन्दी मासिक पार्श्व ज्योति का प्रकाशन सन् 1998 से बुरहानपुर से हो रहा है। इसके सम्पादक कर्मठ एवं युवा पत्रकार

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' है, जो बड़ी लगन तत्परता और श्रमपूर्वक पत्रिका में सामग्री का संयोजन करते हैं। यह पत्रिका अपनी ज्योति से समाज को निरन्तर प्रकाशित करती रहे, यही मंगल कामना है। पत्रिका को डॉ. रमेशचन्द्र जैन, डॉ. अशोककुमार जैन एवं डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन का मार्गदर्शन भी वरिष्ठ सम्पादक के रूप में प्राप्त हो रहा है।

वीर

ब्र. शीतलप्रसादजी एवं पंडित परमेष्ठीदासजी जैन के सम्पादकत्व में 1923 में बिजनौर में वीर पाक्षिक का जन्म हुआ। यह अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद का प्रमुख पत्र है। सम्प्रति यह पत्र दिल्ली से छप रहा है। इसका प्रमुख उद्देश्य जैन समाज में व्याप्त विकृतियों के विरोध में स्वर मुखर करना तथा अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद की नीतियों का प्रचार-प्रसार करना है।

ब्र. शीतलप्रसाद जी अपने युग के ओजस्वी विचारक, कुशल सम्पादक एवं निर्भीक पत्रकार थे। उन्होंने वीर के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की। ब्रह्मचारीजी ने कहा था कि प्रत्येक व्यक्ति को कुन्दकुन्द, उमास्वामी, पूज्यपाद, समन्तभद्र और अकलंक जैसे समर्थ आचार्यों की भांति एक-एक कार्य को अपने हाथ में लेकर पूरा करना चाहिए, तभी जैन संस्कृति, जैन समाज, राज्य एवं देश की सच्ची सेवा संभव होगी। हमें हिन्दी-अंग्रेजी भाषाओं में देश-विदेश से प्रकाशित पुरातात्विक जानकारियों की जैनधर्म और संस्कृतियों की प्राचीनता से तुलना करके तद्विषयक लेखों तथा छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का प्रकाशन करना चाहिए। आधुनिक विद्वान संबंधी खोज खबरों की भी जैन सिद्धान्तों से तुलना करके उसकी जानकारी सामान्य लोगों तक पहुंचाना चाहिए। ब्रह्मचारीजी ने सम्पादकीय लेखों और टिप्पणियों के द्वारा जैनाचार के विभिन्न पक्षों का सज्ञान समाज को कराया था।

भारतीय पत्रकारिता के विकास में भी वीर का विशेष सहयोग रहा है। इसने अपने प्रारंभिक काल से ही संसार दिग्दर्शन स्तम्भ के अन्तर्गत सामाजिक तथा देश विदेश की खबरों को लोगों तक पहुंचाया था। इसने फ्रांस के विद्वानों द्वारा भारतीय विधाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक इंडिया कमेटी नामक संस्था की स्थापना की सूचना दी थी। इत्यादि प्रकार से वीर ने धार्मिक सामाजिक विकास को निरन्तर प्रेरित और प्रोत्साहित किया है। वर्तमान में भी यदा कदा इसके अंक देखने को मिल जाते हैं।

जैन संदेश

श्री कपूरचन्द जैन आगरा वालों ने 1937 में सर्वप्रथम 'जैन संदेश' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आगरा से प्रारंभ किया था। उसके बाद 1939 ई. में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ मथुरा ने इसे अपने हाथ में ले लिया। संघ की नीतियों का प्रचार-प्रसार करना जैन संदेश का प्रमुख उद्देश्य है। इसके सम्पादकों में पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन, डॉ. कन्छेदीलाल जैन आदि प्रतिष्ठित विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। सम्प्रति राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त डॉ. राजाराम जैन इसका सम्पादन कर रहे हैं।

जैन संदेश ने 1958 से त्रैमासिक का प्रकाशन प्रारंभ किया था, जो कुछ समय बाद बंद हो गया। साप्ताहिक पत्र भी पाक्षिक हो गया। जैन संदेश अपनी निर्भीक तथा वेवाक टिप्पणियों के लिए प्रसिद्ध रहा है। सम्प्रति यह पाक्षिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। जैन संदेश ने निरन्तर निष्पक्ष एवं निर्भीक चिन्तन देकर समाज को सावधान किया है, यही इसकी प्रमुख विशेषता रही है।

जैन गजट

यह भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (धर्म संरक्षिणी) का प्रमुख पत्र है। इसका उद्देश्य जैनधर्म और संस्कृति को संरक्षण प्रदान

करना तथा महासभा की नीतियों को प्रचारित करना है। इसका प्रकाशन 1885 में प्रारंभहुआ था। इसके संस्थापक एवं आद्य सम्पादक स्व. बाबू सूरजभान वकील देववंद थे। वकील साहब समाज के उन लोगों में शामिल थे, जिन्होंने जैनधर्म और साहित्य संस्कृति को नई पहचान देने का कार्य अपने हाथों में लिया था। जैन गजट को स्व. बाबू घासीरामजी, स्व. बाबू देवकुमारजी रईस आरा, स्व. पं. जुगलकिशोर मुख्तार सहारनपुर, स्व. पं. जवाहरलाल शास्त्री जयपुर, स्व. बाबू बनारसीदास, स्व. लाला मिश्रीलालजी, अलीगढ़ स्व. बाबू घासीरामजी मथुरा, स्व. पं. रघुनाथ जी सरनऊ, स्व. पं. मक्खनलाल जी। न्यायालंकार मुरैना, स्व. पं. सुमेरचन्द दिवाकर सिवनी, स्व. पं. खूबचन्द शास्त्री इन्दौर, स्व. पं. बंशीधरजी सोलापुर, स्व. पं. इन्द्रलाल शास्त्री विद्यालंकार जयपुर, स्व. पं. अजितकुमार शास्त्री महावीरजी, स्व. पं. कुंजीलाल शास्त्री फिरोजाबाद, स्व. पं. श्यामसुन्दरलालजी फिरोजाबाद, स्व. पं. वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री सोलापुर, श्री हरकचन्द सेठी, पं. नरेन्द्रप्रकाश जैन फिरोजाबाद प्रभृति विद्वानों ने अपनी सशक्त लेखनी से नित नए आयाम देकर समाज में प्रतिष्ठित किया।

जैन गजट ने बीच में कतिपय उतार-चढ़ाव भी झेले। एक बार वह साप्ताहिक से पाक्षिक भी हुआ, किन्तु निर्मलकुमारजी सेठी नई दिल्ली का नेतृत्व पाकर पत्र तथा महासभा दोनों धन्य हो गये। सम्प्रति पत्र नए स्वरूप में समाज की सेवा में सतत् संलग्न हैं। सेठीजी के नेतृत्व में महासभा का भी विस्तार हुआ है। आजकल महासभा तीर्थ संरक्षिणी और महासभा श्रुत संवर्द्धिनी नाम से तीर्थों के संरक्षण एवं श्रुत संवर्द्धन की दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। समाज भी उक्त संस्थाओं को गति प्रदान करने में मुक्त हस्त से सहयोग दे रहा है।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा ने प्राचीन जैन तीर्थ जीर्णोद्धार पत्रिका तथा श्रुत संवर्द्धिनी महासभा ने श्रुत संवर्द्धिनी मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया है, जो समाज को जागरूक बनाने की दिशा में प्रभावकारी कार्य कर रहा है।

जैन मित्र

दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा ने 1600 में जैनमित्र का प्रकाशन प्रारंभकिया था। पं. गोपालदास वरैया और पं. नाथूराम प्रेमी इसके संस्थापक तथा आद्य सम्पादक थे। इनके बाद ब्र. शीतल प्रसाद एवं मूलचंद किशनदास कापड़िया ने संपादन किया । कापड़िया ने लम्बे समय तक जैन मित्र को सम्पादित प्रकाशित किया। तदनंतर उनके सुपुत्र डाह्याभाई कापड़िया ने कुछ समय इसका कार्य देखा। सम्प्रति शैलेष कापड़िया रुचि पूर्वक पत्र का संपादन कार्य कर रहे हैं। प्रारंभ में पत्र का मासिक प्रकाशन हुआ। कुछ वर्ष बाद उसे पाक्षिक किया गया तथा 1919 से यह साप्ताहिक हो गया।यह पत्र समाज में रुचि पूर्वक पढा जाता है। जिनवाणी के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक बुराईयों को दूर करने के उद्देश्य से इसका जन्म हुआ था। इसके संपादकीय हमेशा धार्मिक सामाजिक, रूढ़ि विरोधी, सारगर्भित तथा सामयिक और निष्पक्ष होते थे। पत्र ने बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, मृत्युभोज, अशिक्षा तथा अंध श्रद्धा आदि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जोरदार संघर्ष किया, जिसमें पत्र पूर्ण सफल हुआ।

जैनधर्म और संस्कृति के प्रचार प्रसार में ब्र. शीतलप्रसाद तथा कापड़िया परिवार ने उक्त पत्र के माध्यम से समाज को जागरूक बनाया तथा कवियों लेखकों और विचारकों को प्रोत्साहित करके उनकी एक श्रंखला बना डाली। पत्र ने पूरी शताब्दी के उतार-चढ़ाव झेलते हुए समाज का बहुत उपकार किया है। देश-विदेश के

समाचारों से जैन समाज को अवगत कराते हुए जैन पत्रकारिता के विकास एवं समाज के उत्थान के लिए जैन मित्र ने अविस्मरणीय योगदान दिया है।

जिनेन्दु

समाचार पत्र के आकार के आठ पृष्ठों में प्रकाशित होने वाले जिनेन्दु साप्ताहिक का प्रकाशन विगत 10 वर्षों से अहमदाबाद से हो रहा है। इसके सम्पादक वरिष्ठ पत्रकार श्री जिनेन्द्र कुमार जैन तथा निदेशक धर्मेन्द्र जैन हैं। इसके सात पृष्ठों में हिन्दी भाषा की सामग्री प्रकाशित होती है। यह पत्र जैनों के सभी सम्प्रदायों के समाचारों एवं लेखों को उपयुक्त स्थान देता है। इसलिए इसे सम्पूर्ण जैन समाज में विशेष आदर प्राप्त है। इसके सम्पादक यंगलीडर और दैनिक जैन समाज पत्र भी निकालते रहे हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री जिनेन्द्रकुमार जैन का योगदान अनुकरणीय है।

पत्र-पत्रिकाओं के उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि जैन पत्रकारों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो जैन परम्परा के इतिहास और संस्कृति को प्रचारित करने में सफल रहा है। सम्प्रति जैन पत्रकारों को और अधिक जागरूक बनने की आवश्यकता है, जिससे जैनों की गौरवशाली विरासत को वैश्विक परिदृश्य में भलीभांति प्रतिष्ठित कराया जा सके।

(समन्वयवाणी, अप्रैल 2006, प्रथम पक्ष जैन पत्रकारिता विशेषांक से साभार संशोधित)

यदि जैन पत्रकार निष्पक्षता का परिचय देते हुए कार्य करें तो धर्म, समाज, संस्कृति और लोक व्यवहार की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी साबित हो सकते हैं।

– नीरज जैन, सतना

समाचार पत्र समाज के लोक प्रहरी हैं

■ मिलापचंद डंडिया, जयपुर

माना जाता है कि अखबार का काम लोगों को सूचना देना होता है। जहाँ तक प्रेस रिपोर्टर या संवाददाता का संबंध है यह बात बिल्कुल सही है। अपनी समाचार कथा सम्पादक को सौंपने के पश्चात् रिपोर्टर का काम समाप्त हो जाता है और सम्पादक काम शुरु हो जाता है। समाचार का गुणावगुण के आधार पर आकलन कर उसका प्रकाशन करने या नहीं करने की जिम्मेदारी सम्पादक की होती है। उसे देखना होता है कि समाचार प्रकाशन के योग्य है अथवा नहीं। एक बार समाचार छपा नहीं कि सारी जिम्मेदारी सम्पादक की। परन्तु मेरी समझ में अखबार काम मात्र सूचना देने तक ही सीमित नहीं है। बहुधा देखने में आता है कि समाचार पत्रों में सूचना के नाम पर केवल यह प्रकाशित होता है कि अमुक श्रेष्ठी ने अमुक साधु का पाद प्रक्षालन किया या कि अमुक व्यक्ति पंचकल्याणक में क्या बना या क्या बनेगा? अब ऐसी सूचना में आम पाठक की क्या दिलचस्पी हो सकती है। इस तरह के समाचार में या तो जिस व्यक्ति का नाम छपा है या अधिक से अधिक उसके परिवारजन की दिलचस्पी हो सकती है। आम पाठक की दिलचस्पी तो कतई नहीं होती।

समाचार भी छानें – हम जैन धर्मावलंबी हैं और पानी छानकर पीते हैं। मेरा मानना है कि हमें समाचारों को भी प्रकाशित करने से पहले कई बार छानना चाहिए। यानी छापने से पूर्व विभिन्न कसौटियों पर कस लेना चाहिए।

सम्पादक का दायित्व बनता है कि वह सबसे पहले यह देखे कि समाचार प्रेषक कौन है और उसकी विश्वसनीयता कितनी है? तत्पश्चात् यह देखना चाहिए कि संबंधित समाचार के छपने से पाठकों में क्या प्रतिक्रिया होगी? कहीं समाचार आपसी वैमनस्य का कारण तो नहीं बनेगा। समाचार अंधविश्वास को आस्था के रूप में प्रतिष्ठापित तो नहीं करेगा। समाचार धर्मांधता को बढ़ावा देने वाला तो नहीं है। वह चमत्कार के नाम पर लोगों को मूर्ख बनाने वाला तो नहीं है।

अखबार का काम मात्र सूचना देना नहीं है। अखबारों का काम समाज को सही दिशा दिखाना भी है। पत्र सम्पादकों का कर्तव्य बनता है कि उनका पत्र अंधभक्ति, अंधविश्वास व कुरीतियों के विरुद्ध पाठकों को सचेत करता रहे। ऐसे समय में जब कि समाज दिशाहीन हो रहा है समाचार पत्रों व उनके सम्पादकों दायित्व बहुत बढ़ जाता है। वास्तव में सम्पादक व उसके पत्र को समाज

सुधारक का रोल निभाना चाहिए। जहाँ भी धर्म विपरीत आचरण, समाज को कुरीतियों में धकेलने का प्रयास, अंधविश्वास को बढ़ावा देने की कोशिश, पंथवाद या सम्प्रदायवाद जैसी बुराइयों को हवा देने का प्रयत्न हो वहाँ पर कडे से कड़ा प्रहार करना हर पत्र का धर्म होना चाहिए। देखा गया है कि कई समाचार पत्र इस धर्म का पालन करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते।

जब भी धर्म और समाज को बदनाम करने वाला कोई खोटा काम करता है तब अक्सर लोग उसके बारे में चुप रहने की सलाह देते हैं। दलील दी जाती है कि इस तरह की बातें प्रसारित करने से धर्म और समाज की बदनामी होती है इसलिए ऐसी बातों को छुपाए रखना ही बेहतर होता है। यह एक नितान्त भ्रामक धारणा है। वास्तविकता यह है कि दुराचरण पर पर्दा डालने से उल्टे दुराचारियों के हौसले बुलंद होते हैं। वैसे प्रिंट मीडिया को इस भ्रम में भी नहीं रहना चाहिए कि वे कोई समाचार नहीं छापेंगे तो वह छुपा रह जाएगा। आजकल सोशल मीडिया पर खबरें प्रिंट मीडिया से भी तेजी से फैलती हैं और उन्हें रोक पाना लगभग असंभव है।

जागरूक भी करना है – जैसा कि मैंने पहले कहा समाचार पत्रों का काम सूचना देना मात्र नहीं है। इनका काम समाज में वैचारिक जागृति पैदा करना भी है। हरिजन–अखबार द्वारा महात्मा गाँधी जी ने ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध सारे देश की जनता को कैसे खड़ा कर दिया था। यह इस बात का साक्ष्य है। जैन जगत में आज भी एकाधिक पत्रिकाएं विचार प्रधान हैं और उनकी समाज में प्रतिष्ठा भी है। किसी भी विषय पर भिन्न–भिन्न मत हो सकते हैं पर हमारा कर्तव्य है कि हम विपरीत मत वालों की बात को भी प्रकाशित करें। आपसी संवाद ही प्रगति व शांति का मूल मंत्र है। वाल्तेयर का यह कथन जैन समाचार पत्रों का भी ध्येय वाक्य होना चाहिए–

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं;
फिर भी विचार रखने के आपके अधिकार की रक्षा करूंगा।।

समाज के प्रहरी – समाचार पत्र सम्पादक का काम लोक प्रहरी का काम है। उसका दायित्व है कि वह समाज में घटने वाली हर छोटी बड़ी घटना पर निगाह रखे। उसका यह भी दायित्व है कि समाज को घटना के परिणामों के बारे में आगाह करे। वह एक दम निष्पक्ष हो और बिना भय या लाग लपेट के सही बात कहने का माद्दा रखता हो। तटस्थ लोग समाज के सबसे बड़े दुश्मन होते हैं क्योंकि किसी कवि ने ठीक ही कहा है :

आज अगर खामोश रहे, तो कल सन्नाटा छा जाएगा।
बस्ती बस्ती आग लगेगी, हर बस्ती जल जाएगी।।

■■■

जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल : एक परिचय

नाम : डॉ. अखिल बंसल **पिता का नाम :** श्री महेन्द्र कुमार

जन्मदिनांक : 26 अगस्त 1953

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), डिप्लोमा-पत्रकारिता, पी-एच.डी.

प्रकाशित कृतियाँ : ताकि सनद रहे, जैन पत्रकारिता दशा और दिशा, भ. बाहुबली, आओ जानें जैनधर्म, अहिंसा के स्वर, चंदेरी दर्शन, अध्यात्म शैली के प्रखर प्रवाहक, क्रांतिवीर मर्दनसिंह, भावांजलि, भक्तामर काव्य कलश। **प्रकाशित कामिक्स :** गोम्मटेश्वर बाहुबली, कविवर बनारसीदास, कहान कथा: महान कथा, आचार्य विद्यानंद

प्रकाशित आलेख : सराकसोपान, वीर, अर्हत्वचन, जैन संदेश, जैन गजट, जैन मित्र, दै. शाबाश इण्डिया, जिनेन्दु, जैन पथप्रदर्शक, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, दै. आधुनिक राजस्थान, समाचार जगत, दै. विश्वपरिवार, समन्वय वाणी, संस्कार सुधा इत्यादि में अनेक आलेख प्रकाशित।

सम्पादन : समन्वय वाणी (पाक्षिक) का विगत 41 वर्षों से सम्पादन, अखिल सेतु त्रैमासिक।

आकाशवाणी वार्ताएँ : आकाशवाणी केन्द्र जयपुर से अनेक वार्ताएँ प्रसारित।

संपादित कृतियाँ - कालजयी व्यक्तित्व बनारसीदास, ज्ञानामृत, प्रतिबोध, भगवान ऋषभदेव, भगवान शांतिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान मल्लिनाथ, भगवान नेमिनाथ, वैशाली के गणनायक महावीर, भगवान महावीर : जन्मभूमि का सच, विश्व के धर्म अहिंसा और शाकाहार, जिनेन्द्र अर्चना, जिनेन्द्र पूजांजलि, शुद्धाम्नाय निबंधावली तथा श्रावकाचार : दिशा और दृष्टि। विद्वत परिषद् स्मारिका तथा पण्डित रतनचन्द भारिल्ल अभिनन्दन ग्रंथ, जैन संवाद व विद्वत् संदेश का भी संपादन आपके द्वारा किया गया है। दिगम्बर जैन महासमिति पत्रिका के भी आप सम्पादक मण्डल में रहे हैं।

पुरस्कार : 1. जैन पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु पण्डित कैलाश चंद शास्त्री विद्वत्परिषद् पुरस्कार-3 अक्टूबर 2009 **2.** पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अहिंसा इंटरनेशनल पारसदास अनिल कुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार -30 अक्टूबर 2011 **3.** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ ऋषभांचल गाजियाबाद -माँ कौशल जी द्वारा ऋषभदेव पुरस्कार 26 मई 2014 **4.** एबीएस फाउंडेशन ऋषभदेव द्वारा वाग्मिता पुरस्कार 19 दिसम्बर 2014 **5.** अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् भोपाल द्वारा क्रान्तिवीर मर्दन सिंह कृति हेतु राष्ट्रीय छत्रसाल पुरस्कार - दैनिक भास्कर के सौजन्य से 25 जून 2018 **6.** उम्मीद हेल्प लाइन फाउंडेशन, जयपुर द्वारा उम्मीद रत्न सम्मान 2020- रविवार 23 फरवरी, 2020 **7.** अहिंसा चैनल-दिल्ली द्वारा अहिंसा रत्न अवार्ड 3 अक्टूबर 2021 **8.** 20 फरवरी 2022 को कुन्दकुन्द भारती-दिल्ली द्वारा 1लाख 11 हजार की राशि के साथ आचार्य विद्यानन्द पुरस्कार। **9.** साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा की ओर से पत्रकार प्रवर की उपाधि - 6-7 फरवरी 2023 **10.** सोशली पॉइन्ट फाउंडेशन इन्दौर द्वारा राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार - 11 मार्च 2023 **11.** ब्रांड आइकॉन द्वारा बेस्ट सीनियर हिन्दी जर्नलिस्ट पुरस्कार- 30 मई 2023, **12.** कादम्बरी जबलपुर द्वारा 4 नवम्बर 2023 को स्व. आशुतोष पुरस्कार **13.** अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् भोपाल द्वारा ओरछा में वीरसिंहदेव पुरस्कार 10 मार्च 2024 **14.** वर्धी वेलनेस संस्था द्वारा विश्वरत्न सम्मान 21 अप्रैल 2024 **15.** पाथेय, वर्तिका एवं मंथनश्री जबलपुर द्वारा संस्कृतिश्री अलंकरण 3-4 अगस्त 2024 **16.** उत्तरांचल दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा जैनरत्न अलंकरण 13 अक्टूबर 2024 **17.** जस्टिस नगेन्द्रकुमार जैन फाउंडेशन जयपुर द्वारा पत्रकारिता अवार्ड 15 नवम्बर 2024 **18.** राष्ट्रीय मानव मित्र अवार्ड 26 जनवरी 2025

सम्प्रति : अध्यक्ष - सोशल मीडिया फाउंडेशन, **महामंत्री -** अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ, अ.भा.दि. जैन विद्वत परिषद्, **राष्ट्रीय संचालक -** अथाई साहित्य एवं संस्कृति समन्वय समूह **प्रदेशाध्यक्ष -** अ.भा. दि. जैन परिषद

संपर्क : 129 जादोन नगर-बी. स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-302018

मो. : 9929655786 **ई-मेल :** samanvayvani@gmail.com